



28वाँ अंक
जुलाई-दिसम्बर 2025

दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण

भारत का नं. 1 मछापत्तन

लहरी का शावहस



राजभाषा (संघ के शासकीय प्रयोजनों हेतु प्रयोग) नियम, 1976 (संशोधन : 1987, 2007, 2011)

भारत सरकार ने सरकारी कार्यों में हिंदी के प्रभावी प्रयोग को सुनिश्चित करने के लिए राजभाषा नियम, 1976 बनाए। ये नियम राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(4) और 8 के अंतर्गत अधिसूचित किए गए। बाद में इनका संशोधन 1987, 2007 और 2011 में किया गया, जो कि इस प्रकार हैं:

1. संक्षिप्त नाम, विस्तार और प्रारंभ : नियमों का नाम राजभाषा नियम-1976 है ये पूरे भारत (TN सहित) में लागू होते हैं और राजपत्र प्रकाशन से प्रभावी होते हैं।
2. परिभाषाएँ : नियमों में प्रयुक्त शब्द जैसे- केंद्र सरकार के कार्यालय, कर्मचारी, हिंदी में प्रवीणता, क्षेत्र क/ख/ग आदि की आधिकारिक परिभाषाएँ दी गई हैं।
3. राज्यों तथा केंद्र सरकार से भिन्न कार्यालयों को भेजे जाने वाले पत्र : क्षेत्र क, ख और ग के अनुसार, केंद्र सरकार द्वारा राज्यों/कार्यालयों/व्यक्तियों को भेजे जाने वाले पत्रों की भाषा (हिंदी+अंग्रेजी) निश्चित की गई है।
4. केंद्र सरकार के कार्यालयों के बीच पत्राचार : विभाग-से-विभाग और विभिन्न क्षेत्रों (क/ख/ग) के केंद्रीय कार्यालयों के बीच होने वाला पत्राचार हिंदी या अंग्रेजी में होगा, पर हिंदी का अनुपात सरकार द्वारा निर्धारित किया जाएगा।
5. हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर : किसी भी पत्र का उत्तर हिंदी में प्राप्त हुआ है, तो उसका उत्तर अनिवार्य रूप से हिंदी में दिया जाएगा।
6. हिंदी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग : सभी महत्वपूर्ण सरकारी दस्तावेज द्विभाषी होंगे, और हस्ताक्षरकर्ता यह सुनिश्चित करेगा कि दस्तावेज दोनों भाषाओं में तैयार और जारी हों।
7. आवेदन, अभ्यावेदन, अपील आदि : कर्मचारी हिंदी या अंग्रेजी में आवेदन/अपील कर सकता है। यदि आवेदन हिंदी में है, तो उत्तर भी हिंदी में देना अनिवार्य है।
8. टिप्पणियाँ और नोटिंग लिखना : कर्मचारी फाइलों पर टिप्पणी/नोटिंग हिंदी या अंग्रेजी, किसी भी भाषा में लिख सकता है पर जहाँ हिंदी-प्रवीण कर्मचारी हों, वहाँ कुछ कार्यालयों में नोटिंग-ड्राफ्टिंग केवल हिंदी में लिखना अनिवार्य किया जा सकता है।
9. हिंदी में प्रवीणता : हिंदी माध्यम से परीक्षा पास करने, हिंदी विषय पढ़ने, या स्व-घोषणा देने पर कर्मचारी को “हिंदी में प्रवीण” माना जाएगा।
10. हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान : हिंदी विषय के साथ परीक्षा पास करने, प्राज्ञ एवं अन्य निर्धारित परीक्षा पास करने, या घोषणा देने पर कर्मचारी को “हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान” वाला माना जाएगा।
11. मैनुअल, संहिताएँ, प्रक्रियाएँ एवं लेखन सामग्री : सभी मैनुअल, प्रक्रिया-संबंधी साहित्य, रजिस्टर, नामपट्ट, सूचना-पट्ट, लेटरहेड आदि द्विभाषी में तैयार किए जाएंगे।
12. अनुपालन का उत्तरदायित्व : प्रत्येक कार्यालय प्रमुख यह सुनिश्चित करेगा कि राजभाषा अधिनियम और नियमों का सही पालन हो और इसके लिए आवश्यक निरीक्षण व निर्देश जारी किए जाएँ।



श्री सुशील कुमार सिंह

भा.रे.से.मै.इं.

अध्यक्ष,

दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण

अध्यक्ष की कलम से

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण की हिंदी गृह पत्रिका 'लहरों का राजहंस' का नियमित प्रकाशन तथा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार को निरंतर सुदृढ़ किया जा रहा है। इस अंक के माध्यम से आप सभी के संवाद स्थापित करते हुए मुझे परम हर्ष का अनुभव हो रहा है।

साथ ही, यह बताते हुए अत्यंत गर्व होता है कि नवंबर 2025 तक डीपीए ने 100 MMT का ऐतिहासिक आँकड़ा प्राप्त कर लिया है, जो हमारे सामूहिक परिश्रम, टीमवर्क और परिचालन दक्षता का अद्वितीय उदाहरण है। यह उपलब्धि विविध कार्गो-विशेषकर टिम्बर, साल्ट, फर्टिलाइजर, शक्कर और आयरन ओरी-की सुचारु हैंडलिंग में हमारे अधिकारियों, कर्मचारियों हितधारकों एवं श्रमिक भाईयो-बहनों के समर्पण का प्रतिफल है। जबकि वित्त वर्ष पूरा होने में चार महिने अभी शेष हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदीजी द्वारा वर्ष 2047 तक भारत को समुद्री क्षेत्र में वैश्विक नेतृत्व दिलाने के संकल्प को साकार करने में दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण समर्पित भाव से अग्रसर है।

इसी प्रेरणा के साथ वित्त वर्ष 2025-26 के लिए डीपीए ने 175 MMT का महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया है, और मुझे विश्वास है कि जिस उत्साह और प्रतिबद्धता के साथ 100 MMT का रिकॉर्ड स्थापित किया गया है, उसी ऊर्जा से यह लक्ष्य भी अवश्य प्राप्त किया जाएगा।

सभी कर्मचारियों और अधिकारियों के प्रयासों के फलस्वरूप दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण ने राजभाषा हिंदी के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया है। इसी क्रम में दिल्ली स्थित राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी पत्रिका प्रकाशन की परंपरा को और सुदृढ़ किया जा रहा है। इससे संबंधित दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण की अन्य गतिविधियाँ भी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) की अध्यक्षता में प्रभागी ढंग से संचालित की जा रही है। दीनदयाल पत्तन के निकटस्थ नगर में केन्द्र सरकार के कार्यालयों द्वारा संचालित की जा रही गतिविधियों ने अपना योगदान देकर महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया है। इस दिशा में राजभाषा विभाग की भूमिका सदैव सराहनीय रही है।

दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण ने कार्गो प्रहस्तन के मामले में वित्तीय वर्ष 2024-25 के दौरान निर्धारित लक्ष्य को हासिल करते हुए 150 + मिलियन मीट्रिक टन कार्गो प्रहस्तन का नया कीर्तिमान स्थापित किया है। यह भी अत्यंत हर्ष का विषय है कि राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ट कार्य हेतु पत्तन, पोत परिवहन एवं जलमार्ग मंत्रालय की शील्ड योजना के तहत दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण को 'ख' क्षेत्र के लिए वर्ष 2013-14, 2014-15 और 2015-16 के लिए द्वितीय पुरस्कार एवं वर्ष 2018-19 के लिए प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया। मुझे पूरा विश्वास है कि सभी के संगठित प्रयासों से हम न केवल इस वर्ष भी उपलब्धियों को बनाए रख पायेंगे, बल्कि इन्हें और अधिक ऊँचे स्तर तक ले जा पाएंगे।

अंत में, हिंदी गृह पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सफल प्रकाशन हेतु मैं साधुवाद देता हूँ और इसे बनाए रखने के साथ-साथ आशा करता हूँ कि पत्रिका अपने प्रकाशन के उद्देश्य को सफलतापूर्वक सिद्ध करेगी।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित।





श्री निलाक्ष दासगुप्ता

भा.रा.से.

उपाध्यक्ष,

दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण

उपाध्यक्ष महोदय का संदेश

देश की एकता और अखंडता को बनाए रखने में राजभाषा हिंदी का अहम योगदान है। सच्चे अर्थों में यदि कहें, तो हिंदी हमारी संस्कृति, आदर्श, संस्कारों और हमारे जीवन मूल्यों की सच्ची परिचायक और संवाहक भी है। राजभाषा हिंदी का प्रयोग करना हमारा संवैधानिक दायित्व है। दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन में हमेशा अग्रणी बने रहने का प्रयास करता रहा है और पत्रिका का प्रकाशन इस प्रयास का एक अभिन्न अंग है।

हर्ष का विषय है कि दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण की छमाही गृह पत्रिका 'लहरों का राजहंस' का अट्ठाईसवां अंक प्रकाशित हो रहा है। हिन्दी की यह गृह पत्रिका पत्तन में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपनी रचनाधर्मिता लोगों के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए एक सशक्त मंच प्रदान करती है, साथ ही उन्हें अपना मौलिक साहित्य सृजित करने की प्रेरणा भी देती है।

पत्तन के अधिकारी और कर्मचारी सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में पहले से ही अपना सक्रिय योगदान करते आ रहे हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि पत्तन के कामकाज में राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लिए सभी अधिकारी और कर्मचारी अपने संवैधानिक उत्तरदायित्व को समझते हुए अपना योगदान आगे भी बढ़-चढ़ कर देते रहेंगे।

मैं पत्रिका के प्रकाशन से प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का अभिनंदन करते हुए आप सभी को बधाई एवं हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

धन्यवाद।





श्री योगेश कुमार सिंह

सचिव

दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण

सचिव का संदेश

प्रिय पाठकों,

दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण की हिंदी गृह पत्रिका के इस नवीन अंक में आपको संबोधित करना मेरे लिए सुखद अनुभूति और आत्मिक संतोष का क्षण है। हिंदी पखवाड़ा-2025 के उपलक्ष्य में रचे गए सामूहिक प्रयासों की उजली स्मृतियाँ अभी भी हृदय में ताज़ा हैं - स्वर, शब्द और संवेदनाओं का वह सुगठित संगम, जिसमें हम सभी ने मिलकर अपनी भाषा के प्रति श्रद्धा और प्रेम को नया आयाम दिया।

हिंदी केवल राजभाषा नहीं, हमारी आत्मा का स्पंदन है, वह भाषा जिसमें पीढ़ियों की स्मृतियाँ बसती हैं, जिसमें समाज के दुःख-सुख गूँथे जाते हैं, और जिसमें किसी भी भारतीय का हृदय अपनी सहज अभिव्यक्ति पाता है।

इसी भावभूमि पर आधारित हिंदी पखवाड़ा-2025, दिनांक 16 से 29 सितंबर 2025 तक रचनात्मक ऊर्जा, बौद्धिक उत्साह और सांस्कृतिक अनुराग का सुंदर पर्व बनकर हमारे बीच उपस्थित हुआ। निबंध-लेखन, कविता-पाठ, आशु-भाषण, टंकण प्रतियोगिता, चित्रकला, टिप्पणी प्रतियोगिता तथा विभिन्न विद्याओं के मनोहर आयोजन - इन सबमें प्रतिभागियों ने जिस निष्ठा, कौशल और भाषिक लय को उकेरा, वह प्राधिकरण की साहित्यिक चेतना का उज्ज्वल प्रमाण है।

शब्दों की गूंज में कभी मन की कोमल भावनाएँ थीं, कभी विचारों की तीक्ष्णता, कभी सौंदर्यबोध की कोमल तरंगे और कभी कर्तव्य-निष्ठा का दृढ़ स्वर।

राजभाषा नीति के अनुरूप हिंदी के प्रयोग की हमारी यात्रा अब केवल प्रशासनिक आवश्यकताओं तक सीमित नहीं रही, बल्कि यह हमारे कार्य-संस्कार का अभिन्न अंग बन चुकी है। कार्यालयों में संवाद, तकनीकी कार्यों में भाषा का सुसंगत उपयोग, तथा डिजिटल माध्यमों पर हिंदी की बढ़ती उपस्थिति से सभी प्रयास हमें भाषा के एक ऐसे भविष्य की ओर ले जा रहे हैं जहाँ सरलता और प्रभावशीलता दोनों साथ-साथ चलते हैं।

कच्छ/गांधीधाम क्षेत्र की नगर राजभाषा समिति में प्राधिकरण की प्रतिष्ठित उपलब्धियाँ इस समर्पण की स्वाभाविक परिणति हैं। हमारी टीम ने न केवल नीति का पालन किया है, बल्कि उसे जीवंत अनुभव का रूप भी दिया है- यह उपलब्धि प्रत्येक कर्मचारी की सामूहिक चेतना में उपजे उस सम्मान का परिणाम है, जो हम हिंदी के प्रति हृदय में समाहित रखते हैं।

मैं प्राधिकरण के सभी अधिकारी-कर्मचारियों एवं उनके परिवारों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ, जिनकी सहभागिता ने 2025 के इस पखवाड़े को एक उत्सव, एक परंपरा और एक प्रेरणा में बदल दिया।

आइए हम संकल्प लें - कि हम हिंदी के प्रति हमारा अनुराग केवल औपचारिकता न होकर हमारी पहचान, हमारी संस्कृति और हमारे कर्तव्य का स्थायी आधार बने।

हमारी सामूहिक चेतना का यह प्रकाश दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण को राजभाषा-प्रयासों की नई ऊँचाइयों तक ले जाता रहे और हर वर्ष यह पखवाड़ा हमें शब्दों की गरिमा और भाषा की गरमाहट से और अधिक समृद्ध करता रहे।

आप सभी के लिए हार्दिक मंगलकामनाएँ।



श्री नितिन सिंह तोमर

हिंदी अधिकारी

एवं

संपादक, लहरों का राजहंस

‘संपादकीय’

प्रिय पाठकों,

“लहरों का राजहंस” के 28 वें अंक के साथ दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण (डीपीए) एक बार फिर आपके समक्ष उपस्थित है। यह केवल हमारे सहकर्मियों की रचनाओं का संग्रह नहीं, बल्कि डीपीए की सांस्कृतिक, वैचारिक एवं प्रगतिशील संवेदनाओं का प्रतिबिंब भी है। डीपीए ने राजभाषा हिन्दी के संस्थागत विस्तार को जिस निरंतरता और गरिमा के साथ साधा है, यह पत्रिका उसी प्रतिबद्धता का सजीव प्रमाण है।

मेरे विचार से हमें इस पत्रिका को केवल भाषा के उत्सव के रूप में नहीं, बल्कि सृजन के उत्सव के रूप में देखना चाहिए। सृजन वह सेतु है, जो भाषा के भीतर रहते हुए भी भाषा से परे अर्थ-विश्व को रचता है, जब हम भाषा को अभिव्यक्ति के व्यापक आकाश से जोड़कर देखते हैं, तब वह पहचान का खोत उतारकर संवाद और सहअस्तित्व का माध्यम बन जाती है। यही परिवर्तनशीलता भाषा की जीवन शक्ति है, इसके बिना वह केवल एक स्थिर, निर्जीव व्यवस्था रह जाती है।

हमें संतोष है कि यह पत्रिका डीपीए के सभी अधिकारियों, कर्मचारियों और उनके परिवारजनको सृजनोन्मुख होने का अवसर देती है। और उसी विश्वास का परिणाम उनकी विविध रचनात्मक प्रस्तुतियाँ हैं।

समकालीन समय में रचनात्मक अभिव्यक्ति के स्वरूप में कई नए आयाम जुड़ रहे हैं, जिनके कारण सृजनात्मक ऊर्जा को भी अपने ढंग से विकसित होने की आवश्यकता पड़ती है। ऐसे परिवर्तित परिदृश्य में यह पत्रिका न केवल रचनात्मकता को प्रोत्साहित करने का एक विनम्र माध्यम है, बल्कि डीपीए के बौद्धिक वातावरण को सहज रूप से समृद्ध करने का प्रयास भी करती है। यह यद्यपि किसी विशुद्ध साहित्यिक पत्रिका की भूमिका नहीं निभाती, परंतु डीपीए की रचनाशीलता, उपलब्धियों और विविध गतिविधियों का सुसंगत परिचय अवश्य कराती है। हमें विश्वास है कि विभिन्न अनुभव - स्तरों के आई हमारे लेखकों की प्रस्तुतियाँ आपको सृजन की आत्मीय ऊष्मा का अनुभव कराएँगी।

भविष्य में हम इस पत्रिका को और समृद्ध बनाने, लेखों की संख्या बढ़ाने तथा विचारपरक लेखन को अधिक स्थान देने के लिए प्रतिबद्ध हैं। इन्हीं भावनाओं के साथ, रचनाओं के इस गुलदस्ते को आपको सौंपते हुए मुझे हर्ष और संतोष की अनुभूति होती है। आपकी प्रतिक्रियाओं की हम प्रतीक्षा करेंगे।

आपका अपना,
नितिन सिंह तोमर

||| सुभाषितानि |||

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः ।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ॥

श्रीमद्भगवद्गीता (3.21)

श्रेष्ठ पुरुष जैसा आचरण करते हैं, सामान्य जन उसका अनुसरण करते हैं।
समस्त विश्व उनके उत्कृष्ट आचरण द्वारा स्थापित आदर्शों का
अनुकरण करने का प्रयत्न करता है।

लहरी का शालहंश

28वाँ अंक
जुलाई 2025 - दिसंबर 2025

संरक्षक

श्री सुशील कुमार सिंह - भा.रे.से.मै.ई.
अध्यक्ष

उपाध्यक्ष

श्री निलाभ्र दासगुप्ता - भा.रा.से.
उपाध्यक्ष

मार्गदर्शक

श्री योगेश कुमार सिंह - सचिव
श्री प्रदीप महान्ति - उप संरक्षक
श्री अनंत वी.पी.चोडणेकर - वि.स. एवं मु.ले.अ.
श्री बी. रत्नशेखर - यातायात प्रबंधक
डॉ. अनिल चेलानी - मुख्य चिकित्सा अधिकारी
श्री वी. रवीन्द्र रेड्डी - मुख्य अभियंता
श्री ए. रामास्वामी - मुख्य प्रचालन प्रबंधक

संपादक

श्री नितिन सिंह तोमर - हिंदी अधिकारी

सहायक संपादक मंडल

श्रीमती संगीता खिलवानी - वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक
सुश्री इशरावती यादव - हिन्दी अनुवादक

सहायक सहयोग

श्री हरीश बचवानी - हिन्दी टंक सह वरिष्ठ लिपिक
सुश्री सुहाशी सिन्हा - डे.ए.ओ.
श्री डी.वेंकटेश - अग्रेन्टिस

अनुक्रमणिका

पृष्ठ सं.

1	हिंदी पखवाड़ा - 2025	हिन्दी प्रकोष्ठ	7
2	राजभाषा निरीक्षण	हिन्दी प्रकोष्ठ	9
3	महिला सशक्तिकरण ...	श्रीमती निशा सुशीलकुमार सिंह	10
4	iGOT कर्मयोगी ...	श्री दीपक रमाकांत राणे	13
5	राष्ट्रीय खेल दिवस - 2025	श्री रवि महेश्वरी	14
6	प्रदूषण का दंश	श्री शैलेन्द्र कुमार पाण्डेय	16
7	धीरे-धीरे भीतर जगती एक छोटी रोशनी	श्री नितिन सिंह तोमर	17
8	रहमत	श्रीमती आरती निहालानी	18
9	पृथ्वी बचाओ, जीवन सुधारो	श्री गोपाल शर्मा	18
10	मानसिक स्वास्थ्य पर मौन तोड़ने...	डॉ. नीलम नैनवानी	19
11	अंतिम साक्षात्कार, एक अनकही कथा	श्रीमती संगीता खिलवानी	21
12	चमत्कारी ताबीज़	श्रीमती सोनिया जे. हेमनानी	22
13	नई पीढ़ी का सृजन	श्री महेश खिलवानी	23
14	टूटते रिश्ते बिखरते परिवार	श्रीमती ज्योति एन. भावनानी	25
15	राष्ट्रीय 'वंदे मातरम्' के 150 वर्षों का स्मरणोत्सव	सुश्री इशरावती यादव	26
16	भारतीय संस्कृति - एक समृद्ध विरासत	श्री उदयशंकर शर्मा	27
17	किसान और उसका पुत्र कहानी	श्रीमती हेमलता बी पवागढ़ी	28
18	जल जीवन की कहानी	श्री शंखदीप जाना	28
19	संविधान जिंदा है। क्या हम भी ?	कुमारी जुही दादलानी	29
20	इच्छाओं का समुंदर	सुश्री मीतल एम. गढवी	30
21	शहरीकरण : आधुनिक भारत की तेजी से बदलती तस्वीर	सुश्री लीला शर्मा	31
22	बूढ़े माँ-बाप	श्री डी.वेंकटेश	32
23	पेबलिंग	श्री के. नेताजी	33
24	खेल का महत्व	श्री भावेश बचवानी	33
25	ब्रह्मकुमारी का संदेश	श्रीमती पुष्पा ईसरानी	34
26	तुलना के सुर	श्रीमती दीक्षा राजपुरोहित	35
27	जल ही जीवन है	श्री शिवचरण मीना	36
28	अक्स	श्रीमती हनीफा शमीम	37
29	हिन्दी पखवाड़ा पर विशेष	श्रीमती तन्वी के. उचवानी	37
30	माँ सा कोई खुबसूरत नहीं	श्री कमल आसनानी	38
31	ऑपरेशन सिंदूर : 'वीरों की गाथा'	सुश्री दर्शना धोरिया	38
32	पत्थरों का बोझ	सुश्री सुहाशी सिन्हा	39
33	ऑपरेशन सिंदूर	श्री सोनू शाह	39
34	हिन्दी है हम	सुश्री जिनल सोलंकी	40
35	चींटी	श्रीमती मैरी विजयकुमार	40

हिंदी पखवाड़ा-2025

दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण में हिंदी पखवाड़ा-2025 का आयोजन 16 से 29 सितंबर 2025 तक उत्साह, सहभागिता और भाषाई सजगता के साथ सम्पन्न हुआ। हिंदी के संवर्धन और राजभाषा के रूप में उसके सशक्त प्रयोग को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष आयोजित होने वाला यह पखवाड़ा न केवल भाषाई कार्यक्रमों का क्रम है, बल्कि हमारी भाषाई आत्मा, सांस्कृतिक स्थिरता और राष्ट्रीय पहचान की पुनर्पुष्टि भी है।

डीपीए में इस वर्ष कुल सात विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ, जिनमें सभी वर्गों के कर्मचारियों ने अत्यंत समर्पण और उल्लास के साथ भाग लिया। 16 सितंबर को

कार्मिकों एवं उनकी संतानों तथा नराकास सदस्य कार्यालयों के लिए निबंध लेखन प्रतियोगिता के साथ इस पखवाड़े का शुभारंभ हुआ, जिसमें 36 प्रतिभागियों ने अपनी मौलिक अभिव्यक्तियों से हिंदी की समृद्धि को रेखांकित किया। 18 सितंबर



सचिव महोदय का संबोधन



हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित निबंध प्रतियोगिता

को आयोजित टिप्पण प्रारूपण प्रतियोगिता में 7 कर्मियों ने दक्ष राजभाषा प्रयोग का परिचय देते हुए प्रशासनिक हिंदी की उपयोगिता को सुदृढ़ किया। 19 सितंबर को हुए चित्रकला प्रतियोगिता में 22 प्रतिभागियों ने अपने रंगों और रेखाओं के माध्यम से भाषा और सृजनशीलता के सुंदर संगम को प्रस्तुत किया। इसके उपरांत 22 सितंबर को टंकण प्रतियोगिता के 26 प्रतिभागियों ने हिंदी के व्यवहारिक और तकनीकी पक्ष को गति प्रदान की। 23 सितंबर को 'घ' श्रेणी के कर्मचारियों के लिए विशेष रूप से आयोजित वाचन प्रतियोगिता में 7 प्रतिभागियों ने प्रभावी उच्चारण और अभिव्यक्ति की दक्षता प्रदर्शित की। 24

सितंबर की कविता गायन प्रतियोगिता इस पखवाड़े का हृदय कही

जा सकती है, 25 प्रतिभागियों ने काव्य के माधुर्य, लय और भाव को स्वर देकर राजभाषा की सांगीतिक संवेदना को समृद्ध किया। अंत में 26 सितंबर को आयोजित अंताक्षरी प्रतियोगिता में 65 प्रतिभागियों की उत्साहपूर्ण उपस्थिति ने पखवाड़े के सांस्कृतिक रंग को और अधिक जीवंत बना दिया।



हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित निबंध प्रतियोगिता



राजभाषा शील्ड वितरण 2025 : प्रथम पुरस्कार - अभियांत्रिकी विभाग राजभाषा शील्ड वितरण 2025 : तृतीय पुरस्कार - समुद्री विभाग

इन समस्त प्रतियोगिताओं में डीपीए के 200 से अधिक कार्मिकों ने सहभागिता की, जो इस बात का प्रमाण है कि हिंदी केवल कार्य की भाषा नहीं, बल्कि समुदाय को जोड़ने वाला एक जीवंत सूत्र है। सभी प्रतियोगिताओं का मूल्यांकन डीपीए के अधिकारियों, कर्मचारियों तथा नराकास सदस्य कार्यालयों के प्रतिनिधियों के निर्णायक मंडल द्वारा निष्पक्ष एवं सूक्ष्म दृष्टि से किया गया।

हिंदी पखवाड़ा मनाने का मूल उद्देश्य हिंदी के प्रति आत्मीयता, उपयोगिता और गर्व की भावना को सुदृढ़ करना है। हिंदी केवल एक संचार-माध्यम नहीं, बल्कि भारतीय समाज की सामूहिक स्मृति, सांस्कृतिक चेतना और विविधता में निहित एकात्म भाव का प्रमुख स्तंभ है। ऐसे आयोजनों के माध्यम से न केवल भाषा का व्यावहारिक विस्तार होता है बल्कि नए पीढ़ी के भीतर भाषा-संवेदना, सृजनशीलता और राजभाषा के दायित्वबोध को भी प्रोत्साहन मिलता है।



समापन समारोह



अध्यक्ष महोदय का संबोधन



पुरस्कार वितरण

हिंदी पखवाड़ा-2025 इस दृष्टि से अत्यंत सफल और सार्थक रहा कि इसने डीपीए परिवार में भाषा के प्रति सम्मान, सहभागिता और सांस्कृतिक ऊर्जा को एक साथ उभार दिया। यह पखवाड़ा यह संदेश भी देता है कि हिंदी की उन्नति केवल नीति या प्रावधान से नहीं, बल्कि सामूहिक सहभागिता, प्रेम और सतत अभ्यास से संभव होती है। यही भावना किसी भी भाषा को जीवंत, प्रगतिशील और प्रभावी बनाती है।

राजभाषा निरीक्षण

दिनांक 12/09/2025 को पत्तन, पोत परिवहन एवं जलमार्ग मंत्रालय, नई दिल्ली के श्री मृत्युंजय झा, निदेशक (समन्वय एवं राजभाषा) द्वारा दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण में राजभाषा के कार्यान्वयन एवं अनुपालन का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान निदेशक (समन्वय एवं राजभाषा) महोदय ने डीपीए में हो रहे हिन्दी कार्यों पर गहरा संतोष व्यक्त किया। निरीक्षण उपरांत निदेशक (समन्वय एवं राजभाषा) महोदय ने डीपीए अध्यक्ष, श्री सुशील कुमार सिंह, भा.रे.से.मै.इं. को निरीक्षण प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।



दिनांक 12/09/2025 को पत्तन, पोत परिवहन एवं जलमार्ग मंत्रालय, नई दिल्ली के श्री मृत्युंजय झा, निदेशक (समन्वय एवं राजभाषा) द्वारा दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण में राजभाषा के कार्यान्वयन एवं अनुपालन का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान निदेशक (समन्वय एवं राजभाषा) महोदय ने डीपीए में हो रहे हिन्दी कार्यों पर गहरा संतोष व्यक्त किया। निरीक्षण उपरांत निदेशक (समन्वय एवं राजभाषा) महोदय ने डीपीए अध्यक्ष, श्री सुशील कुमार सिंह, भा.रे.से.मै.इं. को निरीक्षण प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।



महिला सशक्तिकरण : दीनदयाल पोर्ट प्राधिकरण की पहलों से बदलती कच्छ की तस्वीर



श्रीमती निशा सुशीलकुमार सिंह
फर्स्ट लेडी - डीपीए

आजादी के सात दशकों के बाद भारत ने शिक्षा, स्वास्थ्य, उद्योग, रोजगार तथा शहरीकरण जैसे अनेक क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की है। सामाजिक-राजनीतिक चेतना भी पहले की तुलना में कहीं अधिक विकसित हुई है। किंतु इस व्यापक विकास के बीच महिलाओं की स्थिति अभी भी पुरुषों के समकक्ष नहीं पहुंची। भले ही महिलाओं की शिक्षा और सहभागिता में सुधार हुआ है, फिर भी साक्षरता, रोजगार, आर्थिक स्वतंत्रता और सामाजिक सुरक्षा के क्षेत्रों में वे पीछे हैं।



आर्थिक निर्भरता उनके आत्मविश्वास को प्रभावित करती है, इसलिए आर्थिक स्वावलंबन महिला सशक्तिकरण का सबसे आवश्यक तत्व माना गया है। इसी बीच कई संस्थान और संगठन महिलाओं को प्रगति के अवसर देने में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं।

दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण ने भी इस दिशा में सराहनीय कार्य किए हैं, जो न केवल स्थानीय महिलाओं के जीवन में बदलाव ला रहे हैं, बल्कि कच्छ के सामाजिक विकास को भी मजबूत कर रहे हैं।

दीनदयाल महिला सशक्तिकरण केंद्र – अवसर, आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता का संगम

कच्छ की सामाजिक संरचना में महिला कौशल-विकास और आर्थिक अवसर हमेशा सीमित रहे हैं। इस वास्तविकता को बदलने का दृढ़ संकल्प लेकर दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण ने गोपालपुरी पोर्ट कॉलोनी में एक सुव्यवस्थित दीनदयाल महिला सशक्तिकरण केंद्र की स्थापना की। उज्जास महिला संगठन के सहयोग से संचालित यह केंद्र लगभग एक हजार वर्गमीटर के क्षेत्र में महिलाओं के लिए कौशल, सुरक्षा और सम्मान की नई राह खोल रहा है।

यह केंद्र सिलाई, कढ़ाई, आधुनिक कंप्यूटर शिक्षा, संवाद-कौशल, आत्मरक्षा, मिट्टी कला और हस्तकला जैसे अनेक व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करता है। यहाँ आने वाली महिलाएँ केवल एक कौशल ही नहीं सीखतीं, बल्कि अपने भीतर छिपी आत्मविश्वास की शक्ति को पहचानती हैं। यही कारण है कि अब तक 225 से अधिक महिलाएँ इस केंद्र से प्रत्यक्ष रोजगार प्राप्त कर चुकी हैं और 1200 से अधिक महिलाएँ इस केंद्र से कौशल प्राप्त कर चुकी हैं। कई महिलाएँ स्वयं सहायता समूह बनाकर लघु-उद्यम चला रही हैं, और कई इस केंद्र की प्रशिक्षक बनकर दूसरों का मार्गदर्शन कर रही हैं।



यह केंद्र कच्छ में महिला सशक्तिकरण का वह प्रकाश-स्तंभ है जो एक-एक परिवार की आर्थिक और सामाजिक वास्तविकता को बदलने की क्षमता रखता है।

महिलाओं की सुरक्षा, न्याय और अधिकार-सुरक्षा भी दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण की प्रतिबद्धता का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसी उद्देश्य से सी.एल.ए.डब्ल्यू. (Community Law Awareness Warrior) पैरालीगल वालंटियर्स को प्रशिक्षित कर समुदाय स्तर पर तैनात किया गया है। ये कार्यकर्ता महिलाओं एवं बच्चों के अधिकारों के बारे में जागरूकता फैलाने के साथ-साथ हिंसा या उत्पीड़न की स्थिति में पीड़ितों को उचित कानूनी मार्गदर्शन और सहयोग प्रदान करते हैं। कानून, मानवाधिकार और काउंसलिंग का प्रशिक्षण प्राप्त इन वालंटियर्स के माध्यम से कई महिलाएँ अब अपने अधिकारों को जानकर निर्भय होकर न्याय पाने की दिशा में आगे बढ़ रही हैं। साथ ही, DMSK Counselling Centre द्वारा 125 से अधिक महिलाओं को घरेलू हिंसा, संपत्ति-अधिकार, यौन उत्पीड़न और सरकारी योजनाओं का लाभ दिलाने में सहायता दी जा चुकी है। यह केंद्र व्यक्तिगत परामर्श, कानूनी सलाह और प्रशासनिक सहयोग प्रदान कर महिलाओं को मानसिक, कानूनी और सामाजिक रूप से सशक्त बना रहा है।



और सौर ऊर्जा प्रणाली प्रदान की गई। इससे वहाँ रहने वाली बालिकाओं को परिवहन, सुरक्षा और ऊर्जा सुविधाओं में बड़ा सुधार मिला है।

कौशल और परंपरा का संरक्षण – कला और आत्मनिर्भरता का संयोजन

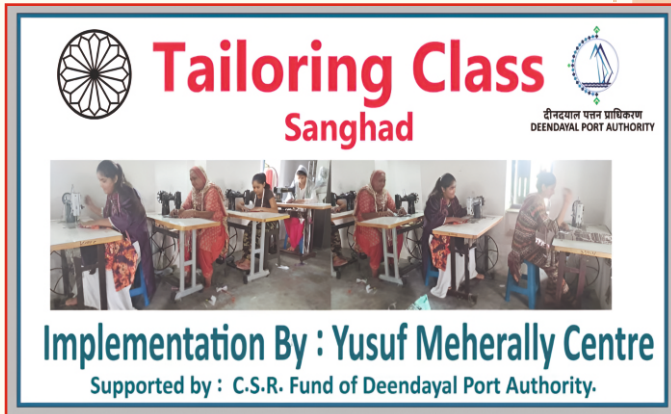
कच्छ की मिट्टी कला, कढ़ाई और हस्तकला केवल स्थानीय पहचान ही नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति की धरोहर भी हैं। इन कलाओं को संरक्षित रखते हुए कच्छ की ग्रामीण महिलाओं को आधुनिक मार्केट से जोड़ने के लिए डीपीए और गांधीधाम कॉलेजिएट बोर्ड ने दीनदयाल कौशल विकास कार्यक्रम के माध्यम से व्यापक प्रशिक्षण उपलब्ध कराया।

यहाँ महिलाएँ हस्तकला, मिट्टी कला, कच्ची कढ़ाई और घरेलू उद्योग सामग्री बनाना सीखती हैं। कई महिलाएँ घरों से ही छोटा उद्योग चलाकर अपनी आय बढ़ा चुकी हैं। इससे न केवल कला को नया जीवन मिला है, बल्कि महिलाओं को अपनी पहचान और सम्मान भी प्राप्त हुआ है।

शिक्षा और सुरक्षा – बालिकाओं के लिए नया भविष्य

लूणी के ग्रामीण क्षेत्र में छात्राओं को सुरक्षित आवास उपलब्ध कराने के लिए कच्. ने बालिका छात्रावास के निर्माण में सहयोग दिया है। इससे दूरस्थ गाँवों की छात्राओं को शिक्षा प्राप्त करने में नई सुविधा मिलेगी और उनके जीवन में सामाजिक सुरक्षा की नई परत जुड़ जाएगी।

यह कदम शिक्षा और सशक्तिकरण की दिशा में एक अत्यंत दूरदर्शी प्रयास है।



महिला कल्याण केंद्रों को सहयोग –

सुरक्षा और संवेदनशीलता की मिसाल

भुज का श्री कच्छ महिला कल्याण केंद्र वर्षों से अनाथ, विधवा और असहाय महिलाओं व बच्चों को आश्रय प्रदान करता आया है। संस्था की आवश्यकताओं को समझते हुए डीपीए ने चार नए कमरों, एक रसोई और भोजनालय का निर्माण किया है। इस सहायता से संस्था की क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है और कई महिलाओं तथा बच्चों के लिए सुरक्षित और गरिमापूर्ण वातावरण उपलब्ध हुआ है।

इसी प्रकार, आदिपुर स्थित करुणा विहार कन्या सदन को एक

वैन, पेवॉर

बल ि क स



यूसुफ मेहरअली केंद्र – प्रशिक्षण के माध्यम से आत्मनिर्भरता की राह

कच्छ के तटीय क्षेत्र में महिलाओं के लिए कौशल-विकास के अवसर सीमित रहे हैं, जिसके कारण अनेक महिलाएँ अपनी आर्थिक क्षमताओं का उपयोग नहीं कर पाती थीं। इस आवश्यकता को समझते हुए दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण ने यूसुफ मेहरअली केंद्र को विशेष वित्तीय सहयोग प्रदान किया, ताकि वहाँ महिलाओं के लिए सिलाई एवं कंप्यूटर प्रशिक्षण कक्षाएँ सुचारु रूप से संचालित की जा सकें।

इस पहल का उद्देश्य महिलाओं को ऐसा व्यावहारिक कौशल प्रदान करना है, जो उन्हें तुरंत आय अर्जन की दिशा में आगे बढ़ने में सक्षम बनाए।

सशक्त नारी ही सशक्त समाज की आधारशिला

दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण के CSR द्वारा किए गए ये विविध और संवेदनशील प्रयास केवल गतिविधियाँ नहीं, बल्कि महिलाओं के जीवन में वास्तविक और गहन परिवर्तन का आधार हैं। प्रशिक्षण केंद्रों से लेकर स्वच्छता सुविधाओं तक, ग्रामीण आजीविका से लेकर बालिका शिक्षा तक—हर पहल समाज को अधिक समान, सुरक्षित और संवेदनशील बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। आज कच्छ की अनेक महिलाएँ आत्मनिर्भरता की राह पर आगे बढ़ रही हैं, परिवारों की आर्थिक शक्ति बन रही हैं और समाज में नए उदाहरण प्रस्तुत कर रही हैं। महिला सशक्तिकरण केवल अधिकारों का मुद्दा नहीं—यह सम्मान, स्वतंत्रता, समानता और अवसरों का प्रश्न है। और इस दिशा में दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण की भूमिका निस्संदेह प्रेरक, अनुकरणीय और परिवर्तनकारी है।





श्री दीपक रमाकांत राणे
वरिष्ठ उप सचिव,
सामान्य प्रशासन विभाग

iGOT कर्मयोगी क्षमता विकास की दिशा में भारतीय शासन तंत्र का नवयुग

भारतीय शासन व्यवस्था आज ऐसे दौर से गुजर रही है जहाँ न केवल प्रशासनिक दक्षता बल्कि आधुनिक ज्ञान, मानवीय दृष्टिकोण और बदलते समय के अनुरूप सतत सीखने की मानसिकता अत्यंत आवश्यकता हो गई है। किसी भी राष्ट्र की प्रगति उसके मानव संसाधन की गुणवत्ता पर आधारित होती है, और सरकार का तंत्र तभी प्रभावी बन पाता है जब उसके कर्मचारी ज्ञान, कौशल और मूल्य, इन तीनों से समृद्ध हों। इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने 'मिशन कर्मयोगी' की शुरुआत की, जिसके डिजिटल स्वरूप के रूप में iGOT कर्मयोग एक सशक्त और आधुनिक प्रशिक्षण मंच के रूप में उभरा है। यह मंच केवल पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराने का साधन नहीं है, बल्कि शासन के प्रत्येक कर्मचारी को उसकी कर्मचारी भूमिका के अनुसार निरंतर सीखने और आगे बढ़ने का अवसर प्रदान करने वाला राष्ट्रीय प्रयास है।

iGOT कर्मयोगी का मूल दर्शन यह है कि एक सरकारी कर्मचारी केवल नियमों, प्रक्रियाओं या परंपरागत अनुभव से नहीं, बल्कि नवाचार, उत्तर दायित्व, पारदर्शिता और प्रभावी संवाद जैसे गुणों से पहचाना जाए। यही कारण है कि यह मंच एक ओर प्रशासनिक व्यवस्था को आधुनिक बनाने पर केन्द्रित है, वहीं दूसरी ओर कर्मचारियों को ऐसे व्यावहारिक कौशल सिखाता है, जिनसे वे नागरिक-केन्द्रित दृष्टिकोण से कार्य कर सकें। इस पहल का उद्देश्य शासन तंत्र को अधिक सक्षम, अधिक संवेदनशील और अधिक लक्ष्य-उन्मुख बनाना है, ताकि राष्ट्र की बदलती आवश्यकताओं के अनुरूप दक्ष मानव संसाधन तैयार हो सकें।

इस मंच का एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यह प्रशिक्षण को पारंपरिक सीमाओं से बाहर लाता है। इससे सीखना समय, स्थान और संसाधनों की सीमा से बंधा नहीं रहता। कोई भी कर्मचारी अपनी सुविधा के अनुसार, अपने कार्यक्षेत्र की आवश्यकताओं को समझते हुए, डिजिटल माध्यम से अपने कौशल को उन्नत कर सकता है। आधुनिक शासन में डिजिटल साक्षरता, डेटा-सुरक्षा, ई-ऑफिस, समस्या-समाधान, नेतृत्व, प्रबंधन, अनेक विधिक और वित्तीय प्रक्रियाएँ, से सभी क्षेत्रों में अद्यतन रहना आवश्यक है। iGOT कर्मयोगी इन सभी विषयों का सुव्यवस्थित और व्यापक ज्ञान प्रदान करता है, जिससे कर्मचारी अपने दायित्वों का निर्वहन अधिक दक्षता और आत्मविश्वास के साथ कर सकें।

आज के प्रतिस्पर्धी और तकनीकी रूप से विकसित प्रशासनिक परिदृश्य में यह आवश्यक है कि हम केवल परंपरागत अनुभव पर निर्भर न रहें। नवीनतम जानकारी, वैश्विक दृष्टिकोण, डिजिटल तकनीक और नागरिक उन्मुख सोच के साथ ही प्रशासनिक तंत्र अधिक प्रभावी बन सकता है। iGOT कर्मयोगी इसी सोच को बढ़ावा देता है। यह मंच सीखने का केवल औपचारिक दायित्व नहीं मानता, बल्कि इसे एक सतत प्रक्रिया, एक स्वाभाविक आवश्यकता और एक पेशेवर उत्तरदायित्व के रूप में प्रस्तुत करता है। जब कोई कर्मचारी बेहतर सीखता है, तो वह बेहतर निर्णय लेता है, बेहतर निर्णय से बेहतर कार्य होता है, और बेहतर कार्य से संगठन ही नहीं, समूचा समाज लाभान्वित होता है।

iGOT कर्मयोगी की यह विशेषता भी उल्लेखनीय है कि यह कर्मचारी को उसके कार्यक्षेत्र के अनुरूप प्रमाणित प्रशिक्षण प्रदान करता है, जिससे उसके कैरियर-विकास के अवसर और व्यापक हो जाते हैं। इससे व्यक्तिगत और व्यावसायिक दोनों प्रकार की प्रगति संभव होती है। ऐसे प्रमाणन न केवल आत्मविश्वास बढ़ाते हैं, बल्कि कर्मचारी को अपनी भूमिका में अधिक सक्षम और प्रभावी बनाते हैं।

अंततः यह कहा जा सकता है कि ज्ञान और कौशल में किया गया निवेश ही किसी संस्था का सबसे स्थायी और लाभकारी निवेश होता है। iGOT कर्मयोगी भारतीय शासन प्रणाली को ऐसे मानवीय संसाधनों से सशक्त कर रहा है, जो न केवल सक्षम हैं, बल्कि संवेदनशील, जागरूक और भविष्य की चुनौतियों के प्रति तैयार भी हैं। यह मंच हमें यह प्रेरणा देता है कि सीखना किसी आयु, पद या परिस्थित का मोहताज नहीं होता, यह एक निरंतर प्रवाह है जो व्यक्ति और संगठन दोनों को उत्कृष्टता की ओर अग्रसर करता है। अपने कौशल को बेहतर बनाना ही वास्तविक कर्म है और यही कर्मयोग भारतीय प्रशासनिक ढाँचे में सकारात्मक परिवर्तन का आधार बन रहा है।





श्री रवि महेश्वरी
कार्मिक अधिकारी,
सामान्य प्रशासन विभाग

राष्ट्रीय खेल दिवस – 2025 डीपीए द्वारा खेल-संस्कृति को नई दिशा

हर वर्ष भी भाँति इस वर्ष भी राष्ट्रीय खेल दिवस देशभर में उत्साह, सम्मान और खेलभावना के साथ मनाया गया। 29 अगस्त को आयोजित यह दिवस महान हॉकी खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद की जन्मजयंती को समर्पित है, वह व्यक्तित्व जिन्होंने भारतीय खेल-आत्मा को विश्व पटल पर अमिट पहचान प्रदान की। यह अवसर केवल स्मरण का दिन नहीं, बल्कि उत्कृष्टता, अनुशासन, समर्पण और सामुदायिक सौहार्द जैसे गुणों को पुनः जाग्रत करने का माध्यम है। इसी राष्ट्रीय भावना को आगे बढ़ाते हुए दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण (डीपीए) ने वर्ष 2025 में अपने गोपालपुरी मैदान में एक भव्य तथा व्यापक जन-भागीदारी वाला आयोजन किया, जिसने गांधीधाम में खेल-संस्कृति को रचनात्मक गति प्रदान की। कार्यक्रम का उद्घाटन प्राधिकरण के अध्यक्ष सुशील कुमार सिंह, आईआरएसएमई द्वारा किया गया। विभागाध्यक्षों, अधिकारियों एवं कर्मचारीगण के साथ-साथ नगर के अनेक विद्यालयों के बच्चों की विशाल उपस्थिति ने पूरे आयोजन को उत्साहपूर्ण, जीवंत और प्रेरणादायी बना दिया। विशेष उल्लेखनीय यह रहा कि माउंट कार्मेल स्कूल, गांधीधाम के कक्षा 11 के छात्रों ने केवल बैड प्रस्तुति देकर समारोह को गरिमामय शुरुआत प्रदान की, जबकि अन्य विद्यालयों ने खेल प्रतियोगिताओं में सक्रिय सहभागिता निभाई।

इस वर्ष डीपीए ने स्थानीय एवं परंपरागत भारतीय खेलों को केन्द्र में रखकर खेल दिवस की मूल भावना को अधिक प्रखर रूप से उभारा। कबड्डी, रस्साकशी, पिट्टु, नींबू रस, पोईजन बॉल, लैम गेम, सैक रेस, फ्रॉग रेस, 100 मीटर दौड़, 200 मीटर दौड़ और रिले रेस जैसी गतिविधियों ने न केवल बच्चों बल्कि वयस्क प्रतिभागियों में





भी उत्साह का संचार किया। इन खेलों की सबसे बड़ी विशेषता यह रही है कि इनमें किसी महंगे उपकरण या जटिल प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं थी, सिर्फ ऊर्जा, उमंग और सहभागिता की भावना पर्याप्त थी, जिसने पूरे मैदान को जीवंत बना दिया।

इस आयोजन में आदर्श इंग्लिश स्कूल गांधीधाम, आदर्श प्राथमिक स्कूल, एमकेवी प्राथमिक विद्यालय, कैलाश नगर पंचायती प्राथमिक स्कूल, प्रभात पब्लिक स्कूल, पीएम श्री जुनी सुंदरपुरी प्राथमिक स्कूल, श्रीमती के.के.शुक्ला प्राथमिक विद्यालय, रेलवे कॉलोनी पंचायती प्राथमिक स्कूल, केन्द्रीय विद्यालय डीपीए, भारतीय विद्या मंदिर कंडला तथा डीपीए अधिकारी एवं कर्मचारियों की टीम सहित अनेक इकाइयों के लगभग 700 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग

लेकर इसे नगर का एक विशाल सामुदायिक उत्सव बना दिया। बच्चों की उत्सुकता, शिक्षकों का मार्गदर्शन और अभिभावकों की उपस्थिति ने यह स्पष्ट कर दिया कि खेल गांधीधाम की सामाजिक संरचना का सशक्त हिस्सा बन सकता है।

डीपीए का यह प्रयास केवल एक प्रशासनिक कार्यक्रम भर नहीं था, बल्कि नगर के युवाओं में खेलों के प्रति रुचि को प्रोत्साहित करने वाला एक महत्वपूर्ण कदम भी था। खेल, व्यक्ति के शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ मानसिक दृढ़ता, टीम-भावना, समयानुशासन और सकारात्मक प्रतिस्पर्धा के संस्कार विकसित करते हैं। आज के युग में जब शहरी जीवन भागदौड़ ओर तनाव से घिरा हुआ है, ऐसे आयोजनों के माध्यम से समुदाय को एक साथ लाना अपनी आप में सामाजिक मजबूती का संकेत है। पारंपरिक खेलों के पुनर्जीवन पर दिया गया यह जोर लोगों को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ता है और पीढ़ियों के बीच एक स्वाभाविक संवाद स्थापित करता है।

प्रतिभागियों के उत्साह को प्रोत्साहित करने हेतु डीपीए ने विजेताओं को मेडल वितरित किए तथा सभी प्रतिभागियों को टी-शर्ट प्रदान कीं, जिससे बच्चों और वयस्कों में समान रूप से गर्व और उपलब्धि की भावना जागृत हुई। कर्मचारियों, अधिकारियों और बच्चों ने एक ही मैदान पर एक साथ खेलते हुए न केवल आपसी सौहार्द बढ़ाया, बल्कि कार्यस्थल से बाहर मानवीय स्तर पर संबंधों की भी सुदृढ़ किया। यह वातावरण इस बात का प्रमाण था कि खेल किसी भी संस्थान में सकारात्मक ऊर्जा, प्रेरणा और स्वस्थ मानसिकता का आधार होते हैं।

गांधीधाम और आसपास के क्षेत्रों में तेजी से बढ़ती युवा आबादी को देखते हुए, ऐसे आयोजनों का प्रभाव और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। यदि स्थानीय खेल-गतिविधियों, प्रशिक्षण सुविधाओं और विद्यालयी स्तर पर नियमित खेल कार्यक्रमों को और विस्तार दिया जाए, तो यह सम्पूर्ण क्षेत्र की सामाजिक एवं सांस्कृतिक संरचना को नई दिशा प्रदान कर सकता है। डीपीए का यह आयोजन निश्चित रूप से अन्य संसाधनों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा कि वे भी खेल-संस्कृति को बढ़ावा देने में समान रूप से योगदान दें।

राष्ट्रीय खेल दिवस 2025 का यह आयोजन स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि खेल केवल वार्षिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि सक्रिय, स्वस्थ और सामंजस्यपूर्ण समाज के निर्माण की आधारशिला हैं। डीपीए द्वारा आयोजित यह भव्य और सुव्यवस्थित समारोह भविष्य के लिए एक दिशा-सूचक दीपक है, जो यह संदेश देता है कि जब संस्थाएँ संकल्पित होती हैं, तो खेलों को जन-आंदोलन में परिवर्तित करना कठिन नहीं। स्थानीय खेलों का पुनर्जीवन, बच्चों की ऊर्जावान भागीदारी और अधिकारियों का प्रेरक नेतृत्व मिलकर एक ऐसे सशक्त समाज का निर्माण करते हैं, जो अंततः राष्ट्र की शक्ति बनता है।





श्री शैलेन्द्र कुमार पाण्डेय,
उप सचिव,
सामान्य प्रशासन विभाग

प्रदूषण का दंश

इक्कीसवीं सदी के औद्योगिक एवं भौतिक विकास ने मानव जीवन को अभूतपूर्व सुविधाएँ अवश्य प्रदान की हैं, परंतु इस चाक के पीछे गहरा अंधकार भी छिपा है और वह है, पर्यावरण का लगातार बिगड़ता स्वरूप। मानव समाज जिस तीव्रता से प्रगति की ओर बढ़ा है, उसी अनुताप में प्राकृतिक संसाधनों का दोहन और पर्यावरण का क्षरण भी बढ़ा है। वायु, जल, मृदा एवं ध्वनि, प्रदूषण के ये सभी रूप आज मानव-जीवन पर दंश की तरह असर डाल रहे हैं, जिनके परिणाम अब केवल भविष्योन्मुख नहीं, बल्कि वर्तमान के लिए भी भयावह बन चुके हैं।

वायु प्रदूषण आज विश्व की सबसे गंभीर समस्याओं में एक है। उद्योगों, वाहनों, कोयला-आधारित ऊर्जा, जंगलों की कटाई तथा शहरीकरण ने वायु की शुद्धता को अत्यंत क्षीण कर दिया है। महानगरों में धुंध, धुआँ, विषैले कण ओर गैसों से मानव के फेफड़ों को लगातार बीमार कर रही है। अस्थमा, फेफड़ों के संक्रमण, हृदय रोग ओर कैंसर जैसी बीमारियों प्रदूषित वायु का सीधा परिणाम हैं। यही नहीं हवा में फैले प्रदूषक तत्व बच्चों के मस्तिष्क-विकास से लेकर बुजुर्गों की आयु तक पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रहे हैं।

जल प्रदूषण भी कम विनाशकारी नहीं है। नदियों में औद्योगिक रसायनों, सीवेज, प्लास्टिक और कृषि-रसायनों का प्रवाह उन्हें जीवनदायिनी धारा से बीमार नालों में बदल रहा है। भूमिगत जल-स्तर की गिरावट और जल-स्रोतों की अशुद्धता के ग्रामीण ओर शहरी दोनों क्षेत्रों के पीने योग्य जल को संकटमय बना दिया है। प्रदूषित पानी के कारण हैजा, टायफाइड, पीलिया और अनेक जल-जनित रोग प्रत्येक वर्ष लाखों लोगों का स्वास्थ्य छीन लेते हैं। प्रकृति के इस मूल तत्व का विषाक्त होना सम्पूर्ण सभ्यता के लिए खतरों की घंटी है।

मृदा प्रदूषण भी पर्यावरणीय संकट का एक महत्वपूर्ण आयाम बन चुका है। रासायनिक खादों, कीटनाशकों, औद्योगिक अपशिष्टों ओर प्लास्टिक के अवशेषों ने मिट्टी की उर्वरता को नष्ट कर दिया है। जिस भूमि से हम अन्न प्राप्त करते हैं, वही भूमि धीरे-धीरे अपनी जैविक शक्ति खो रही है। इस कारण खाद्यान्न की गुणवत्ता घट रही है और विषैले तत्व भोजन-श्रृंखला में प्रवेश कर मानव-शरीर में गंभीर रोगों का कारण बन रहे हैं।

ध्वनि प्रदूषण के दुष्परिणाम भी लगातार बढ़ रहे हैं। शहरी जीवन में वाहनों, मशीनों, ऊँची ध्वनि वाले लाउडस्पीकर्स और निमृण कार्यों ने मानव के मानसिक स्वास्थ्य को असंतुलित कर दिया है। चिड़चिड़ापन, अनिद्रा, उच्च रक्तचाप और तनाव जैसी समस्याएँ सीधे-सीधे ध्वनि प्रदूषण न केवल मनुष्य को प्रभावित करता है, बल्कि पक्षियों और पशुओं की प्राकृतिक संवेदनाओं को भी क्षति पहुँचाता है।

प्रदूषण का यह देश केवल प्राकृतिक अस्तित्व को ही नहीं, बल्कि मानव सभ्यता की समग्र जीवन-पद्धति को भी खतरों में डाल रहा है। शुद्ध पर्यावरण किसी विलासिता का विषय नहीं, बल्कि मानव जीवन का आधार है। इसलिए अब आवश्यकता इस बात की है कि समाज, सरकार, उद्योग और नागरिक सभी मिलकर पर्यावरण के संरक्षण के लिए सजग और प्रतिबद्ध हों। स्वच्छ वायु, निर्मल जल और उपजाऊ भूमि, ये सभी हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं, जिन्हें सुरक्षित रखना हम सभी का कर्तव्य है। यदि हमने अभी भी प्रकृति की चेतावनी को नहीं समझा, तो आने वाली पीढ़ियाँ हमें कभी नहीं करेगी। प्रदूषण पर नियंत्रण केवल प्रशासनिक आदेशों से नहीं, बल्कि जागरूक नागरिक-व्यवहार से संभव है, यही वह मार्ग है जो मानव और प्रकृति के संतुलित सह-अस्तित्व को पुनः स्थापित कर सकता है।





श्री नितिन सिंह तोमर
हिंदी अधिकारी
सामान्य प्रशासन विभाग

जीवन के रास्ते कभी-कभी इतने शांत होते हैं कि हमें भ्रम हो जाता है। मानो आगे सब कुछ सुगम ही रहेगा। पर जीवन अपनी प्रकृति में सीधा नहीं, वृत्ताकार है, एक दिन अचानक वह हमें उस मोड़ पर ले आता है, जहाँ मनुष्य की असली परीक्षा शुरू होती है।

हनी खिलवाणी भी ऐसी ही एक मोड़ से होकर गुज़री है। 22 बरस की उम्र, मेडिकल जगत में कदम रखते हुए उनके हाथ दूसरों के घाव भरने की कला सीख रहे थे। किसी को क्या पता था कि एक दिन वहीं हाथ स्वयं को संभालने की लड़ाई में सबसे बड़े साथी बनेंगे। सड़क दुर्घटना ने उनके जीवन को जैसे एक लंबी, चुप खाई में धकेल दिया, जहाँ आवाजें नहीं, बस मशीनों और उम्मीद की धड़कनें थीं।

पर यह कथा केवल उनके जीवन की नहीं है। यह उन सबकी कहानी है, जिनके सामने अचानक एक ऐसी दीवार खड़ी हो जाती है, जो पार कर पाना असंभव-सा लगता है। इन दीवारों को गिराने के लिए शोर नहीं चाहिए, चाहिए एक धीमा, स्थिर विश्वास, जो भीतर ही भीतर किसी दीपक की लौ की तरह टिमटिमाता रहे। हनी के भीतर भी वही धीमी लौ थी। न बहुत तेज़, न नाटकीय, बस उतनी की अँधेरे को धीरे-धीरे पीछे धकेल सके।

महीनों की रिकवरी किसी जंग की तरह नहीं थी, वह तो एक अतिसूक्ष्म यात्रा थी, एक झुककर साँस लेने की कोशिश, एक हाथ हिलाने का साहस, एक रात काटने का धीरज और एक छोटे-से दर्द को बर्दाश्त कर लेने की नीरव शक्ति।

मनुष्य की सबसे सुंदर ताकत यही है। वह टूटकर भी अपने टुकड़ों का इकट्ठा करने की कला जानता है। और यह कला किसी एक व्यक्ति की संपत्ति नहीं; यह हम सबके भीतर किसी प्राचीन संगीत की तरह बसी है। कभी सोई रहती है, कभी जाग उठती है। और जब जागती है, तो मनुष्य अपने भीतर ऐसा साहस पाता है, जिसकी उसे स्वयं को भी खबर नहीं होती। हनी इस संगीत का एक उदाहरण भर है। वास्तविक नायक तो वह मानवीय जज़्बा है, जो हर इंसान में छिपा है, जब दुनिया पीछे हटती है, तो वह आगे बढ़ता है। जब शरीर थक जाता है, तो वही मन को थामता है, जब रास्ता बंद लगता है, तो वही किसी कोने से उजाला खोज लाता है।

हमारी दुनिया ऐसे अनगिनत लोगों से आबाद है, जो गिरते हैं, पर धीरे-धीरे उठते हैं, जो रोते हैं, पर भीतर कहीं मुस्कानों की राख सन्हालते हैं, जो दर्द से गुज़रते हुए भी अपने भीतर एक छोटी-सी उम्मीद बचाए रखते हैं। इसी उम्मीद में मानवता की सबसे गहरी चमक छिपी है।

हनी के उस मानवीय धैर्य को सलाम है, जहाँ धैर्य है, जो शोर नहीं करता, जो किसी मंच पर खड़ा नहीं होता, जो बस चुपचाप मनुष्य को उसके कठिन दिनों से पार ले जाता है। कभी-कभी जीत गूँजती नहीं, बस धीमे से खुलती है, भोर की पहली किरण की तरह, जिसे देखने के लिए केवल धैर्य चाहिए और शायद यही जीवन का सबसे बड़ा साहस है।





श्रीमती आरती निहालानी
सहायक अभियंता
अभियांत्रिकी विभाग

रहमत

‘अब्बू-अब्बू’, मुन्नी चिल्लाती जा रही थी। इधर अब्बू अम्मी को कुछ बताने में मशगूल थे। झुंझलाहट के मारे वो भी चीख पड़े, ‘क्या है? क्यों चिल्ला रही है मुन्नी’ मुन्नी सहम गई थी। दबी आवाज़ में बोली, ‘अब्बू आपने पटाखे लेके देने का वादा किया था ना’

कल अब्बू मुन्नी को अपने साथ बाज़ार ले गए थे। आते वक्त उसी रस्ते आये थे जहाँ पर पटाखों की बाज़ार लगी थी। उसी बाज़ार में अब्बू के मित्र भी दुकान खोले बैठे थे। जिससे बात करने अब्बू काफी समय तक खड़े रहे थे। मुन्नी ने चारों ओर नज़र दौड़ाई। दिल लुभानेवाले थे सारे पटाखे। अब्बू ने चलने को कहा तो मुन्नी अड़ गई कि मुझे पटाखे चाहिए। अब्बू ने यह कह कर टाल दिया कि ‘कल आते हैं। छोटे भाई को भी साथ ले आयेंगे।’

बाज़ार की जगमगाहट ने मुन्नी की नींद उड़ा दी थी। तरह तरह के पटाखें, फुलझड़ियाँ, रंगो से भरे सितारे न जाने क्या क्या। उस बाल सहज मन को लुभा रहा था। इधर घर आकर अम्मी ओर अब्बू आपस में फुसफुसा रहे थे कि पटाखे लेने की जिद से बच्चों को कैसे मोड़ा जाये। दो साल पहले ही अम्मी के भाई का बेटा पटाखों की वज़ह से घायल हुआ था।

सुबह जब टीवी चलाया तो ख़बर आ रही थी कि जहाँ से मुन्नी और अब्बू लौटे थे, उस बाज़ार में जलती सिगारेट के छोड़ने से पूरी बाज़ार राख़ में तब्दील हो गई थी। कई बड़े, बूढ़े, बच्चे अन्दर घायल हो गए थे। अम्मी ने मुन्नी को कस के गले लगा लिया और मन ही मन अल्लाह का शुक्रिया अदा करने लगी कि अच्छा हुआ जो वो लोग उस वक्त वहां नहीं थे।



पृथ्वी बचाओ, जीवन सुधारो

पृथ्वी निश्चित रूप से ईश्वर का एक अमूल्य उपहार है। पृथ्वी हमारी माता समान है इसलिए सर्वप्रथम हमें पृथ्वी को बचाना है।

- ग्लोबल वार्मिंग : विनाशकारी तत्वों से बचने के लिए हमें कार्बन उत्सर्जन को कम करना जरूरी है।
- वनों की कटाई : वन मिट्टी को बांधने एवं जल विज्ञान चक्र के रखरखाव एवं मानसून के चक्रीय लय को बनाए रखने में सहायक होते हैं।
- अपशिष्ट प्रबंधन : हमें कचरे को कम करना, पुनः उपयोग और पृथक्करण करते रहना चाहिए।
- संसाधनों की रक्षा : वायु और जल जैसे प्राकृतिक संसाधनों के प्रदूषण को रोककर, पृथ्वी को बचाकर हम स्वयं के साथ-साथ अन्य प्राणीओं को भी सुरक्षित रख सकते हैं।
- निष्कर्ष : हमारा नैतिक दायित्व है कि हम अपनी पृथ्वी को खुद और आनेवाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित बनाकर रखें।



श्री गोपाल शर्मा
लेखा अधिकारी
वित्त विभाग



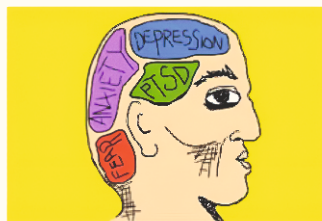
डॉ. नीलम नैनवानी
एमबीबीएस,
एम.डी.(मनोरोग),
डीएनबी (मनोरोग)

मानसिक स्वास्थ्य पर मौन तोड़ने की पहल, आइए संवाद करें

तेज रफ्तार होती दुनिया में, जहाँ तकनीक अपने शिखर पर है और मनुष्य आकांक्षाओं की दौड़ में अपने लक्ष्य साधने में निरंतर व्यस्त है, जीवन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष अक्सर उपेक्षित रह जाता है, मानसिक स्वास्थ्य। शारीरिक उपलब्धियों और बाह्य सफलताओं के बीच मन की सेहत कहीं पीछे छूट जाती है, जबकि वास्तव में वही हमारे समूचे जीवन की धुरी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन मानसिक स्वास्थ्य को उस अवस्था के रूप में परिभाषित करता है जिसमें व्यक्ति अपनी क्षमताओं को पहचानता है, जीवन के तनावों का सामना कर पाता है, उत्पादक रूप से कार्य करता है और समाज के लिए सार्थक योगदान देता है। इसके बावजूद मानसिक स्वास्थ्य पर खुलकर बात न हो पाने के पीछे दो प्रमुख कारण दिखाई देते हैं, पहला, मानसिक रोगों के लक्षणों और संकेतों के प्रति पर्याप्त जानकारी का अभाव और दूसरा, मानसिक बीमारी के लेबल से जुड़ा गहरा सामाजिक कलंक।

भारत की स्थिति विशेष चिंता का विषय है। वर्ष 2015-2016 में आयोजित राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य सर्वेक्षण के अनुसार, भारतीय वयस्कों का एक उल्लेखनीय हिस्सा किसी न किसी मानसिक विकार से ग्रस्त पाया गया। इनमें से एक बड़ा वर्ग ऐसा था जिसे उपचार की आवश्यकता थी, किंतु उसे समय पर और समुचित उपचार नहीं मिल सका। जागरूकता की कमी, सामाजिक भय और प्रशिक्षित पेशेवरों की अपर्याप्त संख्या के कारण अधिकांश लोग उपचार से वंचित रह जाते हैं। यह भी तथ्य सामने आया कि अवसाद जैसी समस्याएँ समाज में व्यापक हैं और पुरुषों में मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी कठिनाइयों की संभावना अपेक्षाकृत अधिक पाई गई।

समस्या को जटिल बनाने में समाज में प्रचलित कुछ गलत धारणाओं की भी बड़ी भूमिका है। आम तौर पर यह मान लिया जाता है कि मानसिक समस्याएँ केवल भावनात्मक रूप से कमजोर लोगों को होती हैं, जबकि सच्चाई यह है कि मानसिक रोग जैविक, मनोवैज्ञानिक और पर्यावरणीय कारकों के जटिल संयोजन का परिणाम होते हैं और व्यक्ति के सामाजिक या वैयक्तिक स्वरूप से उनका कोई सीधा संबंध नहीं होता। एक और भ्रांति यह है कि मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ से परामर्श लेने का अर्थ स्वयं को "पागल" स्वीकार कर लेना है। जैसे शारीरिक बीमारी में चिकित्सक से सलाह लेना किसी तरह की अक्षमता का प्रमाण नहीं होता, वैसे ही मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ से मिलना केवल यह दर्शाता है कि व्यक्ति अस्वस्थ है और उसे सामान्य कार्यक्षमता में लौटने के लिए सहायता की आवश्यकता है।



शरीर की हो या मन की...
बीमारी किसी को भी हो सकती है.... नज़रअंदाज़ न करें !!



प्रकृति के पास जाएँ, व्यायाम करें



डॉक्टर से बात करें और दवा लें



आप सक्षम हैं
अपने ऊपर भरोसा करें

मानसिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ बनाए रखने के लिए जीवन-शैली में कुछ सरल किंतु प्रभावी आदतें अपनाई जा सकती हैं। दिनचर्या को व्यवस्थित रखना, कार्यों की प्राथमिकता तय करना, नियमित शारीरिक गतिविधि को जीवन का हिस्सा बनाना, परिवार और मित्रों के साथ समय बिताना, अपने रुचिकर कार्यों के लिए समय



निकालना, किसी भी प्रकार के नशे से दूरी बनाए रखना और जीवन की परिस्थितियों में सकारात्मक पक्ष पर ध्यान केंद्रित करना मन को संतुलित रखने में सहायक होता है। अपने विचारों और भावनाओं को विश्वासपात्र लोगों से साझा करना भी अत्यंत आवश्यक है, और यदि स्वभाव में अंतर्मुखीपन हो तो लेखन के माध्यम से स्वयं से संवाद करना लाभकारी सिद्ध हो सकता है। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि जब भी व्यक्ति स्वयं को उलझा हुआ या असहाय महसूस करे, तो बिना संकोच सहायता की ओर हाथ बढ़ाए और लक्षणों को शुरुआती अवस्था में ही पहचान कर विशेषज्ञ से संपर्क करे।

किसी ने बहुत सार्थक कहा है कि मन एक अच्छा सेवक है, परंतु एक बुरा स्वामी। अतः मन को अपना अधिपति बनने देने के

बजाय उस पर संतुलित नियंत्रण रखना सीखना आवश्यक है। अंततः, यदि आप स्वयं किसी मानसिक कठिनाई से जूझ रहे हैं, तो उसे नजरअंदाज करके ठीक नहीं किया जा सकता। स्वीकार करना, सही समय पर सही व्यक्ति से परामर्श लेना और उचित मार्गदर्शन को अपनाना ही स्वस्थ जीवन की ओर पहला और सबसे निर्णायक कदम है।

औषधियों को लेकर भी अनावश्यक भय व्याप्त है। यह धारणा व्यापक है कि मानसिक चिकित्सक अनिवार्य रूप से भारी और लत लगाने वाली दवाइयाँ देते हैं, जो व्यक्ति के जीवन को और सीमित कर देती हैं। वास्तविकता इससे भिन्न है। अनेक मानसिक समस्याओं का उपचार परामर्श और विभिन्न प्रकार की थेरेपी के माध्यम से किया जाता है। कौन-सी पद्धति किसी व्यक्ति के लिए उपयुक्त होगी, इसका निर्णय संपूर्ण मूल्यांकन के बाद किया जाता है। गंभीर स्थितियों में दवाइयों का प्रयोग सीमित समय के लिए किया जाता है और स्थिति सुधरने पर उन्हें क्रमशः बंद भी किया जा सकता है। इसी तरह यह मान लेना भी गलत है कि मानसिक रोग किसी व्यक्ति की अपनी गलती होते हैं या भावनाओं पर नियंत्रण न रख पाने का परिणाम होते हैं। वैज्ञानिक अनुसंधान स्पष्ट रूप से सिद्ध कर चुका है कि मस्तिष्क में न्यूरोट्रांसमीटर के असंतुलन से भी मानसिक रोग उत्पन्न होते हैं और धर्म, लिंग, जाति अथवा सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि की सीमाएँ यहाँ लागू नहीं होती।

मानसिक स्वास्थ्य से जुड़े कुछ संकेत ऐसे होते हैं जिन्हें नजरअंदाज करना घातक हो सकता है। लंबे समय तक बना रहने वाला उदासी या निराशा का भाव, अत्यधिक चिंता या भय, निरंतर थकान, दैनिक गतिविधियों में रुचि की कमी, सामाजिक संपर्क से दूरी, नींद और भूख में असामान्य परिवर्तन, आत्महत्या से जुड़े विचार, अत्यधिक चिड़चिड़ापन या जोखिम भरा व्यवहार, नशीले पदार्थों का बढ़ता उपयोग, रोजमर्रा के तनावों से न जूझ पाना, असंगत सोच, अनदेखी-अनसुनी अनुभूतियाँ, तीव्र मनोदशा परिवर्तन, बार-बार आने वाले विचार या आदतन क्रियाएँ तथा स्मृति संबंधी कठिनाइयाँ, ये सभी संकेत किसी विशेषज्ञ से समय पर परामर्श की माँग करते हैं।



मानसिक बीमारी के लक्षण



मूड में अत्यधिक उतार चढ़ाव होना:

कभी ज्यादा खुशी या फिर अचानक से उदास हो जाना मानसिक संतुलन या बाइपोलर डिसऑर्डर का संकेत हो सकता है।



दैनिक समस्याओं से निपटने में कठिनाई:

पुरुष मुद्दा के कामों को संभालने में पेशानी उत्पन्न होना, छोटी-मोटी चुनौतियों पर घबराहट या निराशा महसूस होना मानसिक दबाव का लक्षण है।



अत्यधिक, डर चिंता और बेचैनी:

बिना किसी ठोस कारण के बार-बार डर का एहसास होना, छोटी-मोटी बातों को लेकर चिंतित होना या घबराहट महसूस होना मानसिक रोग का संकेत हो सकता है।



नींद और खाने की आदतों में बदलाव:

अचानक से बहुत ज्यादा या फिर नींद का बहुत कम होना भूख में कमी या फिर अधिक भूख लगा मानसिक संतुलन का संकेत हो सकता है।



सामाजिक रूप से दूरी बनाना:

परिवार, दोस्तों या फिर करीबियों से मिलने जुलने से परहेज करना, अकेलापन में खुशी महसूस होना मानसिक बीमारी का लक्षण हो सकता है।



आत्महत्या के विचार आना:

कई बार निराश होने पर करने की इच्छा या आत्मघाती विचार उत्पन्न होना मानसिक संतुलन के गंभीर संकेत में से एक है।





श्रीमती संगीता खिलवानी
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक
हिंदी प्रकोष्ठ

वृंदावन छोड़कर मथुरा जाने के बाद श्रीकृष्ण फिर कभी ब्रज लौटकर नहीं आए।

कहते हैं कि राधा से उनका सामना केवल दो अवसरों पर हुआ - पहली बार कुरुक्षेत्र में, और दूसरी बार उस महाभयावह मूसल-युद्ध से ठीक पूर्व, जब प्रभास क्षेत्र में समस्त यादव कुल नष्ट हो गया था।

प्रभास - जहाँ आद्य शिवलिंग सोमनाथ स्थित है - यादवों का पुण्यस्थल था। यहीं हर वर्ष भव्य यज्ञ होता था, जिसमें सारा यादव गण एकत्रित होता। उसी पवित्र भूमि के समीप कृष्ण के पैर में बहेलिये का बाण लगा था। उसी यात्रा में उन्होंने ब्रजवासियों को एक बार मिलने के लिए बुलाया - यह राधा-कृष्ण का दूसरा और अंतिम मिलन था। रुक्मिणी भी संग आई थी। इसी मिलन पर सूरदास का वह वरुण पद प्रसिद्ध है -

‘रुक्मणि राधा ऐसो भैंटी, बहुत दिन की बिछुरी जइसे, एक बाप की बेटी।’

राधा का प्रश्न और कान्हा का मौन मिलते ही राधा ने सहजता से पूछा - ‘कहो कृष्ण, कैसे हो?’ कृष्ण ठिठुर गए। धीरे से बोले - ‘राधे, मैं तुम्हारे लिए कब कृष्ण बन गया ? मैं तो आज भी वही तुम्हारा कान्हा हूँ।’

राधा मुस्कुराई, पर वह मुस्कान पीड़ा से भरी थी - ‘नहीं कान्हा, तुम बदल गए हो। तुम अब ग्वालबालों वाले श्याम नहीं रहे।’

कृष्ण ने विस्मय से पूछा - ‘कैसा परिवर्तन ?’

राधा बोली : ‘परिवर्तन ? गिनाऊँ तो एक कहाँ... अगर तुम श्याम होते तो सुदामा को तुम्हारे द्वार न आना पड़ता; तुम ही उसके घर पहुँच जाते।

तुम्हारे गले की वनमाला कहाँ है कान्हा?

क्या तुम्हें पता है, मैं और मेरी सखियाँ-ललिता, विशाखा, अनुराधा - सातों वनों से तुम्हारे लिए फूल चुनती थीं। काँटों ने बाहें छलनी कर दी, ओढ़नियाँ फट गईं, घरवालों की डाँट अलग...

पर जब तुम वह माला पहनकर मुस्काते थे न, तो लगता था लोक और परलोक दोनों धन्य हो गए।

आज तुम्हारे गले में हीरे-जवाहरात है।

हाथों में मुरली की जगह सुदर्शन है।

कभी जिस बंसी की तान से पक्षी पशु भी मोहित हो जाते थे, वही हाथ आज संहार कर रहे हैं...।’ राधा शांत थी, पर वाणी में शीतल आग थी।

कृष्ण का स्वीकार, कृष्ण ने धीमे स्वर में कहा - ‘पर राधे, मैं आज भी तुम्हें याद करता हूँ। तुम्हारी स्मृति आते ही मेरी आँखें भर आती हैं।’

राधा ने यह सुनकर सिर झुका लिया-‘कान्हा, मैं तुम्हें याद नहीं करती। याद उन्हें किया जाता है जो दिल से दूर हो जाएं। तुम तो बसे रहे-मेरी हर सांस में, मेरी हर धड़कन में। मैंने रोया नहीं, क्योंकि डर था- कहीं आँसुओं के साथ तुम बह न जाओ।’

कृष्ण विह्वल हो उठे - ‘राधे.. तुम जीती, मैं हार गया।’

राधा ने भीगी मुस्कान से कहा - ‘याद रखना कृष्ण, तुम्हारे नाम से पहले मेरा नाम लिया जाएगा। जहाँ-जहाँ तुम्हारी पूजा होगी, मैं साथ रहूँगी- बस जगन्नाथ मंदिर को छोड़कर। सीताराम की तरह, हर युग में राधा-कृष्ण एक साथ याद किए जाएंगे।’

राधा की अंतिम इच्छा, कृष्ण ने कहा - ‘राधे, इस जीवन में अब हमारी भेंट नहीं होगी। पर जाते-जाते मैं तुम्हें कुछ देना चाहता हूँ। मांग लो।’

राधा बोली-‘कान्हा, मुझे कुछ नहीं चाहिए। मेरा तुम्हारे प्रति प्रेम-यही मेरा धन है। बस एक इच्छा है... एक बार... बस एक बार, अपनी मुरली की वह तान सुना दो।’

कृष्ण जानते थे कि यह तान विधाता की किसी गाथा का अंतिम संगीत होगी, फिर भी, भक्त की विनती दाल न सके। उन्होंने वह बांसुरी उठाई जिसे वर्षों से नहीं बजाया था

और फिर- एक धुन बही... अद्वितीय, अलौकिक, शांति से भरी, आत्मा को झंकृत करती हुई। यह वही तान थी जो कभी न बजी थी और न कभी फिर बजेगी।

राधा उस धुन में खोती गई - धीरे-धीरे पूरी तरह, परम शांति में और उसी तान में राधा, श्याम में समा गई।





श्रीमती सोनिया जे. हेमनानी
प्रधान लिपिक
केन्द्रीय प्रभाग
वित्त विभाग

चमत्कारी ताबीज़

सीतापुर गाँव में राम नाम का एक नवयुवक रहता था। वह बहुत मेहनती था, पर हमेशा अपने मन में एक शंका लिए रहता था कि वो अपने कार्यक्षेत्र में सफल होगा भी या नहीं।

कभी-कभी वो इसी चिंता के कारण आवेश में आ जाता और दूसरों पर क्रोधित भी हो उठता था। एक दिन उसके गाँव में एक प्रसिद्ध महात्मा जी का आगमन हुआ। खबर मिलते ही राम महात्माजी से मिलने पहुँचा और उनको बोला, 'महात्मा जी मैं कड़ी मेहनत करता हूँ, सफलता पाने के लिए हर-एक प्रयत्न करता हूँ, पर फिर भी मुझे सफलता नहीं मिलती। कृपया आप ही कुछ उपाय बताइए।'

महात्मा जी ने मुस्कराते हुए कहा - 'बेटा, तुम्हारी समस्या का समाधान इस चमत्कारी ताबीज़ में हैं, मैंने इसके अन्दर कुछ मंत्र लिखकर डाले हैं जो तुम्हारी हर बाधा दूर कर देंगे।

लेकिन इसे सिद्ध करने के लिए तुम्हें एक रात श्मशान में अकेले गुजारनी होगी।

श्मशान का नाम सुनते ही राम का चेहरा पीला पड़ गया, ललल..ल.., लेकिन मैं अकेले रातभर कैसे रहूँगा.. राम कांपते हुए बोला।

'घबराओ मत यह कोई मामूली ताबीज़ नहीं है। यह हर संकट से तुम्हें बचाएगा।' महात्मा जी ने राम को समझाया।

राम ने पूरी रात श्मशान में बिताई और सुबह होते ही महात्मा जी के पास जा पहुँचा।

हे महात्मा ! आप महान हैं, सचमुच ये ताबीज़ दिव्य है, वरना मेरे जैसा डरपोक व्यक्ति रात बिताना तो दूर, श्मशान के करीब भी नहीं जा सकता था। निश्चय ही अब मैं हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकता हूँ।

इस घटना के बाद राम बिल्कुल बदल गया, अब वह जो भी कार्य करता उनको विश्वास हो जाता कि ताबीज़ की शक्ति के कारण उसमें सफल होगा।

और धीरे-धीरे यही हुआ... वह गाँव के सबसे सफल लोगों में गिना जाने लगा।

उस वाक्य के करीब एक साल बाद फिर वही महात्मा जी गाँव में पधारे।

राम तुरंत उनके दर्शन को गया और उनके दिए चमत्कारी ताबीज़ का गुणगान करने लगा।

तब महात्मा जी बोले, 'बेटे, जरा ताबीज़ निकालकर देना।' उन्होंने ताबीज़ खोला। उसे खोलते ही राम के होश उड़ गए। क्योंकि उस ताबीज़ के अन्दर कोई मंत्र-वंत्र नहीं लिखा था.. वह तो धातु का एक टुकड़ा था।

राम बोला, महात्मा जी ये तो एक मामूली ताबीज़ है फिर इसने मुझे कैसे सफलता दिलाई।

पुत्र हम इन्सानों को भगवान ने एक विशेष शक्ति देकर यहाँ भेजा है। वो है, विश्वास की शक्ति। तुम्हें अपने आप पर यकीन नहीं था, खुद पर विश्वास नहीं था, इसलिए, तुम अपने कार्यक्षेत्र में सफल नहीं हो पा रहे थे। लेकिन उस ताबीज़ की वजह मैं तुम्हें अपने अन्दर वो विश्वास हो गया, तो तुम सफल होते चले गए।

इसलिए किसी ताबीज़ पर यकीन करने की बजाय अपने कर्म पर, अपनी सोच पर और अपने लिए निर्णय पर विश्वास करना सीख लो तो कामयाब होते जाओगे।

राम को आज बहुत बड़ी सीख मिल गई।

मित्रो, सफलता की सीधा संबंध आपके अन्दर के, विश्वास से होता है। बस, मन में विश्वास का होना जरूरी है, आप कर सकते हैं। सफल हो सकते हैं।

विश्वास रखिए, आगे बढ़िए और सफलता पाइए।

धन्यवाद दीजिए उस प्रभु को जिसने आपके अन्दर विश्वास की शक्ति प्रदान की है।





श्री महेश खिलवानी
कनि. अभि. (इलेक्ट्रीकल)
सी.एम.ई.विभाग

नई पीढ़ी का सृजन

जैसा कि आप सब लोग जानते होंगे सृजनात्मकता अर्थात् नव-सृजन की वह जीवन-शक्ति जो कलाकारों, कवियों, वैज्ञानिकों और फिलोसोफर में होती है। जो अपने आसपास की दुनिया को आधार बना कर ही नव निर्माण करते हैं। जब शब्दों से विभिन्न उपयोगी कृतियों की रचना की जाती है तो इसे सृजनात्मक लेखन कहते हैं। लेखन शब्द का अर्थ बहुत विशाल होता है। सार्थक, योजनाबद्ध और सरसदंग से शब्दों को विस्तार देना ही लेखन है। किंतु इस विस्तार में वह लेखन जिसका संबंध मनुष्य के सुख-दुख, हर्ष-शोक आदि से जुड़ा है, उसे सर्जनात्मक लेखन कहा जा सकता है। सृजनात्मकता का संबंध मनुष्य की अभिव्यक्ति की तड़प से होता है। कोई दुख में गाता है तो कोई खुशी के मारे रो पड़ता है। यही भाव-विचार जब भाषा के माध्यम से प्रकट हो तो उसे सर्जनात्मक लेखन की संज्ञा दे सकते हैं।

लेखन महज शब्दों का खेल नहीं है, हुनर या तकनीक भी नहीं है, यह सोच और कल्पना की वह जमीन है जहां आदमी अपने ऊपर चढ़े हुए बाजारवाद का रंग उतारने की कोशिश कर सकता है और यथार्थ को छू सकता है। आज के दौर में लेखक का सबसे बड़ा दर्द यह है कि जिस मनुष्य को लेकर वह माथापच्ची कर रहा है उस मनुष्य ने साहित्य का साथ छोड़ दिया है। साहित्य की दुनिया से नौजवानों का गायब हो जाना इसी बात का संकेत है। आज जिंदगी की बाहरी जरूरतें आंतरिक जरूरतों पर इस कदर हावी हो चुकी हैं, जिसका सृजन-प्रक्रिया पर भी प्रभाव पड़ा है। यही वजह है कि लेखक का भावजगत भी काफी हद तक सिकुड़ गया है। आज के साहित्य के माहौल की बात करूं तो एक तरफ हमारे पास बहुत अच्छे और अनुभवी साहित्यकार हैं तो दूसरी तरफ युवा लेखकों की जैसे खोज जारी है। अपनी मातृभाषा में बात करने एवं लिखने वालों की तादाद दिन-ब-दिन ऐसे कम होती जा रही है, जैसे पेड़ों पर चहकती चिड़ियों की। नये लेखकों की कमी से हालत यह हो गई है जैसे रेगिस्तान में बबूल के पेड़ों के झुंड को भी बगीचे जैसा माना जाने लगा है।

आज साहित्य में वही युवा, लेखन-कार्य से जुड़े नजर आते हैं जिन्हें उनके परिवारवाले प्रोत्साहन देते हैं या फिर उनके कोई रिश्तेदार काफी समय से साहित्य से जुड़े हुए हैं। हां, कुछ ऐसे युवा-लेखक अवश्य मिल जाते हैं जिन्हें अनुभवी लेखकों का सानिध्य प्राप्त होता रहता है। युवा पीढ़ी को साहित्य-सृजन के लिए निसंदेह सकारात्मक वातावरण की आवश्यकता है परंतु उससे भी अधिक जरूरी है वे अपने व्यक्तित्व में लेखन-अभिव्यक्ति की क्षमता विकसित करके साहित्य के सृजन को ही अपना सद्देश्य समझें। किसी भी प्रकार का सृजन-कार्य तभी संभव है जब उसके पीछे सृजनकर्ता का अध्ययन छिपा हो। अध्ययन न केवल आनंद व ज्ञान प्रदान करता है बल्कि सृजन या लेखन के लिए प्रेरित भी करता है। वर्तमान युवा-वर्ग अक्सर ये दलील देता हुआ मिल जाएगा कि उसके पास पढ़ने का वक्त नहीं है। तो अध्ययन न करने वाला वर्ग अगर लेखन-कार्य करने लगे तो सहज ही समझा जा सकता है कि वह लेखन कितना स्तरीय होगा। ऐसी परिस्थिति में समकालीन साहित्यिक संस्थाओं की जिम्मेदारियां दुगुनी हो जाती है। क्योंकि उनपर न केवल भाषाओं का संरक्षण, प्रचार-प्रसार का दायित्व है अपितु युवा लेखकों को एक समृद्ध साहित्यिक भाषा विरासत के रूप में सौंपने की चुनौतियां भी हैं। पिछले कुछ वर्षों से साहित्य अकादमी द्वारा युवा लेखकों को ध्यान में रखकर कई उपयोगी और प्रभावी कार्यक्रम रखे जाते रहे हैं, जिससे वे सृजनात्मक लेखन के विभिन्न आयामों से न सिर्फ अवगत होते हैं बल्कि उन्हें एक स्पष्ट दिशा भी मिलती है। युवा लेखकों को विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित कर उन्हें प्रोत्साहित किया जाना भी एक सकारात्मक कदम है। इस प्रकार के कार्यक्रमों

से वर्तमान पीढ़ी के युवा-लेखकों की सृजन क्षमता में वृद्धि होती है, साथ ही साहित्य पढ़ने में रुचि भी बढ़ती है।

आज की नई पीढ़ी प्रतिभाशाली है। शोषण के प्रति, वर्तमान समस्याओं के प्रति तीव्र आक्रोश है, लेकिन फिर भी कहीं-न-कहीं ठोस चिंतन का अभाव स्पष्ट दिखता है। समाज आज असाधारण रूप से टूटा-बिखरता दिख रहा है, जिसके कारण आज का लेखक एक भयंकर वैचारिक भटकाव से जूझ रहा है। यही भटकाव सार्थक सृजन में अबरोध उत्पन्न कर रहा है। यही वजह है नई पीढ़ी के साहित्यिक रचनाएं हमेशा कामयाब नहीं होती, शायद इसलिए कि इन्होंने जिंदगी का गहराई से अभ्यास नहीं किया है। विरासत में मिले हुए साहित्य का अभ्यास नहीं किया है। भाषा की पकड़ नहीं है। कुछ ऐसे तथ्य हैं जो नई पीढ़ी को सार्थक सृजन करने से रोकते हैं, जिनका एक संक्षिप्त उल्लेख यहां करना चाहूंगा

(1) आज के तथाकथित विकसित (बाजारवादी) माहौल में लेखक को वही लिखना पड़ता है जो बाजार की मांग है। तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत किए गए काल्पनिक तथ्य को सत्य का रूप देकर मनोरंजक बनाना की एकमात्र उद्देश्य बन गया है।

(2) आज तकनीकी विकास ने पाठक वर्ग को दर्शक वर्ग में बदल दिया है। जो पढ़ा जाना आवश्यक था ज्ञानार्जन के लिए, उसे विभिन्न दृश्य-माध्यमों से समाज में परोसा जा रहा है। यह एक खतरनाक स्थिति है और यही स्थिति सृजन को सार्थक बनाने से रोक रही है। कदम से कदम मिलाकर चलने के लिए लेखक आज दर्शकों की मांग अनुसार कुछ भी लिख लेता है। क्योंकि सृजन की भूख पेट की भूख के सगक्ष वग तोड़ ही देती है। इसका स्वाभाविक परिणाम यह हुआ है कि हर लेखक अपनी कलम की कीमत लिए तैयार है।

(3) आज लेखन को एक सृजन का स्वरूप न बनकर धनार्जन का साधन बनाने पर जोर दिया जा रहा है। बाजारीकरण के इस दौर में सृजन को दिखावा मात्र बनाए रखना लेखक की मजबूरी है।

(4) साहित्य के पठन-पाठन में आई कमी के कारण स्थिति ऐसी हो गई है कि साहित्यिक पुस्तकों का कोई भविष्य ही नहीं रह गया है। इसलिए रचनाकार ऐसा साहित्य रचने से बचना चाहता है जो लोगों के लिए समझना मुश्किल हो और पुस्तकालयों या मुट्ठी भर लोगों की आलमारियों की शोभा बढ़ाए या फिर धूल खाती रहे।

सृजन-प्रक्रिया के लिए यह दौर नई पीढ़ी के लिए चुनौतीपूर्ण तो है ही। लेकिन फिर भी मुझे उम्मीद है कि सृजन कार्य को अगर पूजा मानकर युवा लेखक अपनी कलम चलाते रहें तो इस दिशा में एक क्रांतिकारी परिवर्तन आ सकता है।





श्रीमती ज्योति नरेश भावनानी
प्रधान लिपिक
सामान्य प्रशासन विभाग।

टूटते रिश्ते बिखरते परिवार

आज का आधुनिक दौर तेजी से बदलता जा रहा है। एक तरफ आधुनिकता की वजह से देश विकास के पथ पर आगे बढ़ रहा है तो दूसरी ओर आधुनिकता के कारण रिश्ते टूटते जा रहे हैं और परिवार बिखरते जा रहे हैं। इसकी वजह क्या है?

आज के दौर में रिश्तों के टूटने और परिवारों के बिखरने के कई कारण हैं, जिसमें सबसे बड़ा कारण है बच्चों में सहनशक्ति की कमी, संपूर्ण स्वाधीनता की चाहत, बढ़ती बिन जरूरी मांगें, आधुनिक रहन सहन और बड़ों में हस्तक्षेप की आदत, आधुनिक दौर के हिसाब से खुद को थोड़ा भी न बदलना, बेटी और बहू में फर्क इत्यादि। इसका मतलब यह कतई नहीं है कि हर जगह सिर्फ बच्चे ही गलत हैं या फिर बड़े ही गलत हैं। पर दोनों पीढ़ियों में विचारों के मतभेद के कारण आज लगभग हर घर में रिश्ते बिखरने लगे हैं।

आज के प्रतियोगिता के दौर में उच्च रहन सहन के कारण बच्चे अपने परिवार से बहुत दूर अथवा विदेशों में बसने लगे हैं। जिसकी वजह से भी आज परिवार बिखरने लगे हैं। ऊपर से पाश्चात्य संस्कृति के अनुसरण के कारण जो बच्चे संयुक्त परिवारों में रहते हैं वे भी बच्चे संपूर्ण रूप से आज़ाद पसंद करते हैं। उन्हें किसी तरह की न रोकटोक पसंद आती है और न ही किसी तरह का बंधन। उनका रहन सहन भी आधुनिक होने की वजह से आजकल बच्चों में मर्यादा की कमी देखने को मिलती है जिसे पुराने विचार रखने वाले मां बाप के लिए सहन करना मुश्किल सा होता जा रहा है, जिससे लगभग हर परिवार में आए दिन झगड़े होते रहते हैं। जिसके परिणाम स्वरूप आखिर एक दिन बच्चों और बड़ों को अलग होना पड़ता है।

इसके अलावा आजकल बहुत भी नौकरी करने लगी हैं। वे अपने अधिकारों और आज़ादी के प्रति जागरूक होती जा रही हैं। उन्हें अपनी जिन्दगी में किसी का हस्तक्षेप पसंद नहीं आता है। उन के ऊपर घर, नौकरी के साथ साथ सामाजिक दायित्व भी बढ़ता जा रहा है, जिस कारण वो घर में कई बार जितना ध्यान देना चाहिए या जितना काम करना चाहिए उतना नहीं कर पाती हैं, जिसे घर के बड़े बिल्कुल भी महसूस नहीं कर पा रहे हैं। दूसरी ओर घर के बुजुर्ग लोग अपने बेटे और बहू की निजी जिंदगी और घर की छोटी छोटी बातों में भी हस्तक्षेप करना नहीं छोड़ते हैं। जिस वजह से भी आज संयुक्त परिवार टूटने लगे हैं। जिसका असर आज की पीढ़ी पर बहुत बुरी तरह से पड़ रहा है। आज के बच्चों की जो परवरिश होनी चाहिए वो नहीं हो पा रही है क्यों कि मां बाप दोनों नौकरी या व्यवसाय में व्यस्त होने के कारण कामवालों के भरोसे पल रहे हैं। उन्हें जो घर के बुजुर्गों से संस्कार मिलने चाहिए वो नहीं मिल रहे हैं और बच्चों का अधिकतर समय मोबाइलों में बीत रहा है जिसका असर उनके स्वास्थ्य और चरित्र दोनों पर ही बुरी तरह से पड़ रहा है। इतना ही नहीं आज के बदलते दौर में आधुनिकता के कारण और महत्वाकांक्षाएं बढ़ने के कारण पति और पत्नी की कई बार एक दूसरे को समझ नहीं पाते हैं और एक-दूसरे से किसी भी बात में समझौता नहीं कर पाते हैं जिस वजह से आए दिन तलाक के किस्से भी बढ़ते ही जा रहे हैं।

इन सभी दुष्परिणामों के निवारण का एकमात्र हल है आपसी समझ और देखादेखी को छोड़कर अपनी भारतीय संस्कृति को अपनाना व उसे बरकरार रखना। अगर दोनों पीढ़ियां यानि घर के बेटे और बहूएं तथा घर के बुजुर्ग अपने-अपने विचारों में थोड़ा बदलाव लाएं अर्थात् बच्चे अपनी पाश्चात्य संस्कृति को छोड़कर भारतीय संस्कृति अपनाएं, घर की मर्यादाओं का पालन करें, घर के बुजुर्गों के मान-सम्मान का ध्यान रखें, घर के कामकाज में जितना हो सके उतना हाथ बंटाएं, फिजूलखर्ची पर अंकुश लगाएं, घर के बड़े अगर कुछ बोलते भी हैं तो उसके नजरंदाज करे और छोटी छोटी बातों पर बेटों से बहुओं की शिकायत न करे, जितना हो सके अपने बच्चों की जिंदगी में दखल देने से दूर रहें और बच्चों का थोड़ा अपनी मर्जी से भी जीने दें तो साथ में रहना बिल्कुल भी मुश्किल नहीं लगेगा और सभी का जीवन हंसी खुशी से गुजरेगा इसके अलावा आज की नई पीढ़ी को भी घर जैसा वातावरण मिलेगा, अपनी भारतीय संस्कृति का विकास होगा और हर जगह मर्यादा का पालन होगा।





सुश्री इशरावती यादव
हिन्दी अनुवादक
हिन्दी प्रकोष्ठ

राष्ट्रीय 'वन्दे मातरम्' के 150 वर्षों का स्मरणोत्सव

‘वन्दे मातरम्, ये शब्द एक मंत्र है, एक ऊर्जा है, एक स्वप्न है, एक संकल्प है। वन्दे मातरम्, ये एक शब्द मां भारती की साधना है, मां भारती की आराधना है। वन्दे मातरम्, ये एक शब्द हमें इतिहास में ले जाता है। ये हमारे आत्मविश्वास को, हमारे वर्तमान को, आत्मविश्वास से भर देता है, और हमारे भविष्य को ये नया हौसला देता है कि ऐसा कोई संकल्प नहीं, जिसकी सिद्धि न हो सके। ऐसा कोई लक्ष्य नहीं, जो हम भारतवासी पा ना सकें।’

: ‘माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी’

माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा राष्ट्रगीत वन्दे मातरम् के 150 वर्ष पूरे होने पर समग्र भारत देश में 7 नवंबर से 14 नवंबर 2025 के दौरान राष्ट्रगीत वन्दे मातरम् के 150 वर्षों का स्मरणोत्सव के रूप में मनाने का आह्वान किया। जिसके अनुपालन में समग्र देश में इसे बहुत उत्साह के साथ मनाया गया। हमारे कार्यालय दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण द्वारा भी बढ़-चढ़ कर भाग लिया गया। इसमें स्वयं अध्यक्ष महोदय, श्री सुशीलकुमार सिंह ने सभी विभागाध्यक्षों और अन्य अधिकारियों एवं कर्मचारियों के साथ राष्ट्रगीत ‘वन्दे मातरम्’ का गान किया। इस आयोजन में सभी कार्मिक बड़े उत्साह के साथ भाग लें, इसलिए एक कैरिओके की भी व्यवस्था की गई, साथ ही एक सेल्फी पॉइंट भी बनाया गया था। जिसमें बड़ी संख्या में कार्मिकों ने भाग लिया और स्वयं की आवाज में वन्दे मातरम् का गान कर वेबसाइट पर अपलोड किया। सभी को आनंद के साथ-साथ देशभक्ति का भी आस्वादन हुआ। 14 नवंबर 2025 को मुख्य सतर्कता अधिकारी एवं सचिव महोदय की उपस्थिति में डीपीए केन्द्रीय विद्यालय के विद्यार्थियों के साथ-साथ अधिकारियों और कर्मचारियों ने सामूहिक रूप से वन्दे मातरम् का गान किया। जिससे समग्र वातावरण देशभक्ति की भावना से ओत-प्रोत हो गया।

आइए अब इस गीत के गौरवपूर्ण इतिहास को देखते हैं –

राष्ट्रीय गीत ‘वन्दे मातरम्’ की रचना बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय ने संस्कृत और बाँग्ला मिश्रित भाषा में एक गीत के रूप में की थी। जिसका प्रकाशन सन् 1882 में उनके उपन्यास आनन्द मठ में हुआ। इस गीत में मातृभूमि की स्तुति एक देवी के रूप में की गई है-जो शक्ति, समृद्धि और शांति का प्रतीक है। इस गीत को गाने में 65 सेकेंड (1 मिनट और 5 सेकेंड) का समय लगता है। सन् 2003 में, बीबीसी वर्ल्ड सर्विस द्वारा आयोजित एक अर्न्तराष्ट्रीय सर्वेक्षण में दुनिया के सबसे मशहूर गीतों का चयन करने के लिए दुनिया भर से लगभग 7,000 गीतों को चुना गया था। बी.बी.सी. के अनुसार 155 देशों/द्वीप के लोगों ने इसमें वोट किया। उसमें वन्दे मातरम् शीर्ष के 10 गीतों में दूसरे स्थान पर रहा था। वो पल हम सभी भारतीयों के लिए अत्यंत गौरवपूर्ण रहा था।

रचना की पृष्ठभूमि : सन 1870-80 के दशक में ब्रिटिश शासकों ने सरकारी समारोहों में ‘गोंड! सेव द क्वीन’ गीत गाया जाना अनिवार्य कर दिया था। अंग्रेजों के इस आदेश से बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय को, जो उन दिनों एक सरकारी अधिकारी (डिप्टी कलेक्टर) थे, बहुत ठेस पहुँची और उन्होंने सम्भवतः 1876 में इसके विकल्प के तौर पर संस्कृत और बाँग्ला के मिश्रण से एक नये गीत की रचना की और उसका शीर्षक दिया - ‘वन्दे मातरम्’।

भारतीय स्वाधीनता संग्राम में भूमिका : रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने 1896 में एक प्रमुख राष्ट्रीय सभा में पहली बार ‘वन्दे मातरम्’ को गीत के रूप में गाया। उनकी अत्यंत मधुर प्रस्तुति ने शीघ्र ही राष्ट्र को गर्व और एकता की भावना से भर दिया। वन्दे मातरम् भारत के सशक्त राष्ट्रीय जागरण का गान बन गया। लोकमान्य बालगंगाधर में इतनी श्रद्धा थी कि उन्होंने इसे शिवाजी की समाधि के तोरण पर उत्कीर्ण करवाया था। 6 अगस्त 1905 को बंग-भंग के विरोध में टाउन हॉल की सभा में करीब तीस हजार भारतीयों ने इस गीत को एक साथ गाया। यहाँ तक की बंग-भंग के बाद ‘वन्दे मातरम् संप्रदाय’ की स्थापना भी हो गई थी। ब्रिटिश सरकार इसकी लोकप्रियता से भयाक्रान्त हो उठी और उसने इस पर प्रतिबन्ध लगाने पर विचार करना शुरू कर दिया।

राष्ट्रगीत के रूप में स्वीकृति : स्वाधीनता संग्राम में इस गीत की निर्णायक भागीदारी को देखते हुए स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा लिखे व गाये गये गीत जन-गण-मन को राष्ट्रगान और बंकिमचन्द्र चटर्जी द्वारा रचित प्रारम्भिक दो पदों का गीत वन्दे मातरम् राष्ट्रगीत के रूप में स्वीकृत किया गया। सचमुच वंदे मातरम्... एक ऐसा गीत जिसका पहला शब्द ही हमारे हृदय में भावनाओं का सैलाब जगा देता है। यह हमें माँ भारती के ममतामयी स्नेह का अनुभव कराता है। यह हमें माँ भारतीय की संतान होने के नाते अपनी जिम्मेदारियों का एहसास कराता है। मानों हमसे चीख-चीख कर कह रही हो कि मेरी संतानों ये देश तुम्हारा है। इसे विकास के उस पथ पर पहुँचा दो जिससे देश के किसी कोने से कृंदन की ध्वनि न आए। हर दिशा में मात्र हास्य हो, आनंद हो और विकास हो। आओ एक बार फिर अपने भीतर देशभक्ति की भावना को जगा लें और साथ मिलकर इस देश को उगते सूरज की दिशा में ले जाएँ और.. फिर से जाएँ -

वन्दे मातरम्,
सुजलां सुफलाम् मलयजशीतलाम्, शस्यश्यामलाम् मातरम्।
वन्दे मातरम्।
शुभ्रज्योत्सनापुलकितयामिनीम्, फुल्लकुसुमितोद्रुमदलशोभिनीम्
सुहासिनीं सुमधुर भाषिणीम्, सुखदां वरदां मातरम्
वन्दे मातरम्।



श्री उदयशंकर शर्मा
आर.पी.कामदार
हिन्दी प्रकोष्ठ

भारतीय संस्कृति — एक समृद्ध विरासत

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम और समृद्ध संस्कृतियाँ में से एक मानी जाती है। यह केवल रीति-रिवाजों, भाषाओं और परंपराओं का संगम ही नहीं, लोक जीवन को सही दिशा दिखाने वाली एक महान दार्शनिक विचारधारा भी है, भारत की संस्कृति की विशेषता उसकी विविधता में निहित एकता है। वहाँ विभिन्न जातियाँ, धर्म, भाषाएँ और संप्रदाय सह अस्तित्व के साथ जीवन व्यापन करते हैं।

भारत को 'विश्व गुरु' इसलिए कहा गया है क्योंकि यहाँ वैदिक काल से ही ज्ञान, दर्शन और आध्यात्मिक का अद्वितीय विकास हुआ। वेद, उपनिषद, पुराण, रामायण और महाभारत केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि नैतिक आचरण और कर्तव्यबोध का मार्ग भी दिखाते हैं। सहिष्णुता, करुणा और सत्य भारतीय अध्यात्म का आधार है।

भारत की सांस्कृतिक विरासत में शास्त्रीय संगीत, नृत्य और कला की महत्वपूर्ण भूमिका है। भरत नाट्यम्, कथम्, ओडिसी, मोहिनीअट्टम् और कपिपुड़ी जैसे नृत्य रूप भारतीय संस्कृति की गौरवपूर्ण पहचान हैं। भारतीय संगीत की राग-रागनियाँ मन को शांति और आत्मा को आनंद प्रदान करती हैं।

त्यौहारों की रोनाक और सांस्कृतिक विविधता :

भारत में मनाए जाने वाले त्यौहार, दीपावली, होली, ईद, क्रिसमस, बैसाखी, पोंगल, सामूहिक आनंद और सहाय का संदेश देते हैं। प्रत्येक त्यौहार प्रकृति, ऋतु परिवर्तन और मानव-जीवन के उत्साह का प्रतीक है, यही कारण है कि भारतीय संस्कृति में उत्सव केवल रस्में नहीं, बल्कि सामाजिक एकता और मानवता की अभिव्यक्ति है।

भारतीय समाज में परिवार को सर्वोच्च महत्व दिया जाता है। बड़ों का सम्मान अतिथि को देवतुल्य मानना तथा सौहार्दपूर्ण व्यवहार भारतीय संस्कृति की पहचान है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' अर्थात् 'सारा विश्व एक परिवार है' - भारत का मूल मंत्र है। जो मनुष्यों के बीच भाईचारे को सशक्त बनाता है।

भारतीय संस्कृति एक ऐसी धरोहर है, जिसे युगों-युगों से संयोजा और संवारकर आगे बढ़ाया गया है। यह केवल परंपराओं का संग्रह नहीं बल्कि जीवन जीने की एक पद्धति है जो मनुष्य को संतुलन, सहाय और नैतिकता की ओर अग्रसर करती है। आधुनिक युग में भी भारतीय संस्कृति की यह अमूल्य विरासत विश्व को मार्गदर्शन करती रहेगी।





श्रीमती हेमलता बी. पवागढ़ी
वरिष्ठ लिपिक
वित्त विभाग

किसान और उसका पुत्र कहानी

रामू ने सोचा कि उसे अपने बेटे को एक महत्वपूर्ण सीख देने की जरूरत है। उसने राजू को खेत में एक पुरानी गाड़ी के पास बुलाया और कहा, 'देखो, बेटा, इस गाड़ी को चलाना आसान नहीं इसके पुराने पहिए हो गए हैं और यह चलने में कठिनाई पैदा करती है। अगर हम इसे चलाना चाहते हैं, तो हमें इसके पहियों को ठीक करना होगा।'।

रामू ने राजू से कहा, 'तुम इस गाड़ी के पहियों को बदल दो और फिर इसे चलाने की कोशिश करो।' राजू ने पहियों को बदलने का काम शुरू किया और उसे बहुत कठिनाई हुई। उसे पसीना आ गया, हाथों में छाले पड़ गए, लेकिन उसने हार नहीं मानी। आखिरकार, उसने पहियों को ठीक कर लिया और गाड़ी को चलाने में सफल हुआ।

रामू ने कहा, 'देखो बेटा, यह गाड़ी हमारी खेती की तरह है। अगर हम इसे सही तरह से देखभाल नहीं करेंगे और मेहनत नहीं करेंगे, तो यह नहीं चलेगी। लेकिन जब तुमने प्रयास किया और मेहनत की, तो तुमने इसे चलाने में सफलता पाई।'।

राजू ने अपने पिता की बात को समझा और खेती के काम को गंभीरता से लिया। उसने मेहनत शुरू की और धीरे-धीरे खेती में सफलता प्राप्त की। वह अपने पिता के नक्शे कदम पर चलने लगा और उसकी मेहनत ने उसके जीवन को बदल दिया।

सारांश : इस कहानी में, एक किसान अपने बेटे को मेहनत की महत्वता समझाता है। किसान रामू ने अपने बेटे को सिखाया कि बिना मेहनत और प्रयास के जीवन में सफलता प्राप्त नहीं की जा सकती। यह कहानी इस बात पर जोर देती है कि जीवन में कठिनाईयों का सामना करने और मेहनत करने से ही हम अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं।



जल जीवन की कहानी

यह धरती प्यारी, हरी-भरी
शीतल-सी यह अद्भुत दुनिया
सूरज के चारों ओर सदा
घूमे पल-पल करती क्रीडा

इस धरती पर सब जन आज
ज्ञान-पाठ में लगे हुए
सत्तर प्रतिशत जल से निर्मित
कितने है यह कहे हुए

तेज़ धूप में वही जल फिर
बन बाष्प गगन को चढ़ जाता
बादल बन नभ के आँगन में
न जाने किस ओर वह जाता

उड़ते-उड़ते बादल प्रायः
नीले अम्बर को छू जाते
हीरे जैसी बूँदे बनकर
धरती-माथे पर झर जाते

पर्वत शिखर से उतर प्रवाह
झरना बन मंद-मंद बहे
नदियों को आकार मिले
जीवन की दंग-अँजुरी सहे

जल है तो संसार सुहाना,
जल से ही जीवन सम्भव है
जल-अपव्यय ओर प्रदूषण
रोकें-यही समय संदेश है।



श्री शंखदीप जाना
अनुबंध कर्मचारी
यातायात विभाग



संविधान जिंदा है | क्या हम भी?



कुमारी जुही दादलानी
अनुबंध कर्मचारी
समुद्री विभाग

हर साल, 26 नवंबर चुपचाप हमारे कैलेंडर में आ जाता है। न आतिशबाजी, न परेड, न कोई लंबा वीकेंड, सिर्फ एक तारीख, अगर आप उसकी रूह को न जानते हों। क्योंकि 26 नवंबर 1949 वह दिन था जब भारत ने कुछ असाधारण किया: हमने लिख दिया कि हम क्या बनना चाहते हैं। वह दस्तावेज, भारत का संविधान, सिर्फ कागज पर स्याही नहीं था, वह शब्दों में लिखी एक क्रांति था। और उस कलम को थामने वाले थे डॉ. भीमराव रामजी अंबेडकर, एक विधिवेत्ता, अर्थशास्त्री, दार्शनिक, समाज सुधारक और न्याय पर भारत का सबसे प्रबल विश्वास रखने वाला व्यक्तित्व। लेकिन आज हमें एक असहज करने वाला प्रश्न खुद से पूछना चाहिए हम उनके नाम का सम्मान तो करते हैं, पर क्या उनके मूल्यों का पालन करते हैं?

संविधान: भारत का आईना और उसका नैतिक मार्गदर्शक : बाबासाहेब ने संविधान को सरकारी दफ्तरों की दीवारों की शोभा बढ़ाने के लिए नहीं बनाया। उन्होंने इसे एक आईना बनाया, ताकि यह हमें बार-बार दिखा सके कि हमें कैसा राष्ट्र होना चाहिए, खासकर तब, जब हम रास्ते से भटक जाएँ। लेकिन आईने झूठ नहीं बोलते। और अगर हम ध्यान से देखें, तो आज क्या दिखाई देता है? असमानता, जो अब भी हमें बाँटती है भेदभाव, जो आज भी संस्कृति के नाम पर छिपता है; शोर, जो सच को दबा देता है नागरिक, जिन्हें अपने अधिकार याद हैं पर कर्तव्य भूल चुके हैं, और एक राष्ट्र, जो हर चीज पर बहस करता है, सिवाय उन मूल्यों के जिन पर गर्व करता है। बाबासाहेब अंधे अनुयायी नहीं चाहते थे। वे सोचने वाले नागरिक चाहते थे, एक ऐसा देश, जो सवाल करे, तर्क दे और संकीर्ण पहचान से ऊपर उठे।

अंबेडकर का भारत सिर्फ कानून नहीं, अंतरुकरण था : उन्होंने कहा था, “संविधान सिर्फ एक दस्तावेज नहीं है। यह जीवन का वाहन है, और उसकी आत्मा हर युग की आत्मा होती है।” और उन्होंने एक सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न पूछा: क्या एक अच्छा संविधान बुरे लोगों के बीच टिक सकता है? यह प्रश्न आज भी जलता है। क्योंकि, क्या हम सभी नागरिकों के साथ बराबरी का व्यवहार करते हैं? क्या हम अन्याय का विरोध करते हैं, भले ही वह किसी हमारे जैसे नहीं व्यक्ति के साथ हो रहा हो? क्या हम सम्मान के साथ असहमति जताते हैं, न कि नफरत से? क्या हम कमजोरों की रक्षा करते हैं, उनका मजाक नहीं उड़ाते? क्या हम जागरूक होकर वोट देते हैं, भीड़ मानसिकता से नहीं? अगर इन सवालों के जवाब हमें असहज करते हैं, तो ऐसा होना चाहिए। संविधान दिवस एक समारोह नहीं, यह एक चुनौती है। हम 26 नवंबर को यादों के लिए नहीं मनाते हम इसे एक वादे की याद दिलाने के लिए मनाते हैं, कि भारत कानून से चलेगा, न्याय से निर्देशित होगा और समानता से प्रेरित होगा। लेकिन सच यह है कि हम अक्सर अपने प्रिय अधिकार याद रखते हैं और जो कर्तव्य हमारे हैं, उन्हें भूल जाते हैं। हम सोशल मीडिया पर प्रस्तावना उद्धृत करते हैं, पर क्या हम उसके शब्द, न्याय, स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व, को अपने जीवन में जीते हैं?

बंधुत्व, सबसे भूला हुआ शब्द : वह शब्द, जिससे बाबासाहेब डरते थे कि हम उसे नजरअंदाज कर देंगे, क्योंकि बिना बंधुत्व वाला राष्ट्र, बेहतर कानूनों और श्रेष्ठ संस्थानों के बावजूद, भावनात्मक रूप से बँटा हुआ रह जाता है।

दो यादों की तारीख: 26 नवंबर का मौन व्यंग्य : इस तारीख का एक और कारण है जो हमें रोककर सोचने पर मजबूर करता है, 26/11 मुंबई आतंकवादी हमला। दो घटनाएँ, एक ही तारीख, पर अर्थ बिल्कुल विपरीतरूप एक ने भारत को संविधान दिया, उसकी शक्ति, उसकी एकता दूसरी ने परखा कि क्या हम उन मूल्यों पर सच में चलते हैं। 26/11/2008 को, जब गोलियाँ चल रही थीं, कुछ और उठ रहा था, बंधुत्व। अजनबियों की मदद करते सामान्य लोग, अधिकारी जिन्हें वे लोग कभी नहीं मिले थे, उनकी रक्षा करते हुए और घायल मुंबई का अगले ही दिन दृढ़ होकर खड़ा होना, यही संविधान का असली रूप था। किताबों में नहीं,

व्यवहार में। संसद में नहीं, सड़कों पर। इसने अंबेडकर को सही साबित किया: एक राष्ट्र सिर्फ कानूनों से नहीं, अपने लोगों की आत्मा से जीवित रहता है। सवाल यह है, क्या वह आत्मा हर दिन जीवित है, या सिर्फ त्रासदी में?

डॉ. अंबेडकर को असली श्रद्धांजलि मूर्तियाँ नहीं, व्यवहार है : बाबासाहेब ने मंदिर, फूल या राजनीतिक नारे नहीं माँगे। उन्होंने कुछ और ज्यादा कठिन माँगा: एक ऐसा समाज, जो तर्क से सोचे, नैतिकता से जिए और अन्याय का निडरता से विरोध करे। उन्होंने हर इंसान की गरिमा के लिए संघर्ष किया, इसलिए नहीं कि यह लोकप्रिय था, बल्कि इसलिए कि यह सही था। इसलिए संविधान दिवस पर असली प्रश्न यह नहीं है: “क्या हम बाबासाहेब को याद करते हैं?” असली प्रश्न है: क्या हम वैसे नागरिक बन रहे हैं, जैसा बाबासाहेब ने सोचा था?

इस संविधान दिवस, आइए आईना उठाएँ : भारत को भावुक भाषण नहीं चाहिए; भारत को ईमानदार आत्मचिंतन चाहिए। हम बाबासाहेब को एक ऐसा राष्ट्र दें, जहाँ समानता का पालन हो, सिर्फ प्रचार नहीं, अधिकारों के साथ कर्तव्य भी निभाए जाएँ; न्याय में देरी न हो, इनकार न होय जाति की चोट की शक्ति खत्म होय बेटियाँ बिना डर के बढ़ें अल्पसंख्यक बिना संदेह के जिएँ; नफरत की जगह बहस होय और कानून हर व्यक्ति, नेता और संस्था से ऊपर खड़ा हो। यही वह भारत था जिसका उन्होंने सपना देखा। यही वह भारत है जिसका संविधान वादा करता है। यही वह भारत है जिसे हमें बनाना है।

एक वादा जिसे हमें दोबारा निभाना है : संविधान दिवस अतीत का उत्सव नहीं, यह वर्तमान को बचाने और भविष्य को सुरक्षित करने का दिन है। यह याद दिलाता है कि भारत केवल एक देश नहीं, यह एक विचार है, एक सपना है, जो बलिदान, बहस, दर्द, साहस और उम्मीद से जन्मा है। 26 नवंबर 1949 को, भारत ने खुद से वादा किया था कि न्याय जीतेगा, समानता उठेगी और गरिमा कायम रहेगी। और 26 नवंबर 2008 को, भारत ने साबित किया कि एकता सबसे अंधेरे समय में भी टिक सकती है। सवाल यह है: क्या हम यह वादा हर दिन निभाएँगे, सिर्फ 26 नवंबर को नहीं? संविधान रास्ता दिखा चुका है। बाबासाहेब हमें उपकरण दे चुके हैं। अब जिम्मेदारी... हमारी है।



इच्छाओं का समुंदर

मन की गहराई में छुपी,
अनगिनत चाहतों की लहरें हैं।
हर एक लहर कुछ कहती है,
कुछ पाने की फिर से जिद करती है।

कभी सोने सा चमकता सपना,
कभी प्रेम भरा कोई अपनापन।
कभी ऊँचाई छूने की चाह,
कभी शांति का छोटा सा राह।

इच्छाएँ बुझती नहीं जल्दी,
एक पूरी हो तो दूसरी पलती।
जैसे रेत पर नाम लिखा हो,
हर लहर नई उम्मीद में ढलती।

पर क्या हर इच्छा ज़रूरी है?
या बस मन की एक तृष्णा अधूरी है?
कभी रुक कर सोचो एक पल,
क्या चाहते हमें बना रहीं है छत ?

इच्छाओं का कोई अंत नहीं,
पर संतोष में छुपा है चिर सुख कहीं।
जो पास है उसे भी देखो,
कभी खुद स भी मोहब्बत करके देखो।



सुश्री मीतल एम.गडवी
प्रबंधक प्रशिक्षु
सामान्य प्रशासन विभाग



सुश्री लीला शर्मा
सुपुत्री - उदयशंकर शर्मा
आर.पी.कामदार
हिन्दी प्रकोष्ठ

शहरीकरण : आधुनिक भारत की तेजी से बदलती तस्वीर

आज के तेजी से विकसित होते विश्व में शहरीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है। जिसने समाज, अर्थव्यवस्था और संस्कृति - तीनों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। शहरीकरण का अर्थ केवल शहरों का विस्तार भर ही नहीं है, बल्कि एक जीवनशैली सोच और अवसरी, चुनौतियों का एक व्यापक परिवर्तन है। भारत में शहरीकरण की रफ्तार पिछले कुछ दशकों से अत्यंत तेज हुई है। गाँवों से शहरों की ओर बढ़ते कदम केवल सीमित सुविधाओं से मुक्ति का मार्ग नहीं है। बल्कि एक बेहतर भविष्य के सपने भी समेटे होते हैं।

भारत में शहरीकरण के पीछे कई गहरे कारण हैं। सबसे पहले रोजगार के अवसर शहरों की सबसे बड़ी ताकत है। ग्रामीण क्षेत्र में सीमित संसाधन और कृषि पर अत्याधिक निर्भरता लोगों की शहरों की ओर आकर्षित करती है, यहाँ उभरते उद्योग, आईटी सेक्टर, मल्टीनेशनल कंपनियाँ और सेवा क्षेत्र युवाओं को बेहतर भविष्य का भरोसा देते हैं। जीवनशैली की उन्नति परिवहन व्यवस्था मनोरंजन के साधन, तेज संचार, तकनीकी और सुरक्षा व्यवस्था भी लोगों की शहरों में बसने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

शहरीकरण को देश की प्रगति का आर्थिक इंजन माना जाता है। उद्योग और व्यापार के विस्तार को गति देकर रोजगार के नए अवसर प्रदान करता है। सांस्कृतिक विविधता बढ़ती है क्योंकि देश के अलग-अलग हिस्सों से आए लोग एक साथ रहते हैं और एक दूसरे की परंपराओं को समझते हैं।

शहरीकरण सांस्कृतिक एकता में महत्वपूर्ण भूमिका है। विविध स्थलों, राज्यों से आए विविध लोगों के मिलने पर सांस्कृतिक मिलन होता है। ग्रामीण शहरों के विकास होने से भी शहरीकरण में वृद्धि होती है। शहरीकरण भारत की नीति को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भाग है कारण कि आधुनिक भारत को बनाने में सबसे पहले शहरीकरण का हिस्सा है। शिक्षा और स्थापत्य अच्छा होने से सभी विकास की ओर कदम बढ़ाएगा। शहरीकरण का होना एक प्रगति का अवसर है।

शहरीकरण बढ़ती जनसंख्या यह एक सकारात्मक प्रभाव है शहरीकरण में सुविधाओं का प्रमाण आवश्यकता के अनुरूप है। शहरीकरण की बड़ी-बड़ी इमारतें कई सारे नौजवानों के सपने और कई लोगों का जीवनभर की कहानी है जो इन बड़ी इमारतों से जुड़ी हैं।

शहरीकरण भारत की प्रगति का प्रतीक है, लेकिन यह तभी सार्थक है, जब इसका स्वरूप संतुलित और मानवीय हो। हमें ऐसे शहर बनाने की आवश्यकता है जहाँ केवल ऊँची इमारतें ही न हों, बल्कि साफ हवा, सुरक्षित वातावरण गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, बेहतर व्यवस्था और सभी के लिए समान अवसर मौजूद हों। शहरीकरण की सही दिशा यही है जो प्रकृति, समाज और अर्थव्यवस्था - तीनों को साथ लेकर चले।

आइए हम ऐसे भारत की कल्पना करें जहाँ शहर विकास की रोशनी फैलाएँ और गाँव उसकी जड़ को मजबूती प्रदान करें।





श्री डी. वेंकटेश
स्नातक प्रशिक्षु
सामान्य प्रशासन विभाग

बूढ़े माँ-बाप

एक कहानी एक छोटे से गांव में रहने वाले वृद्ध दंपति, रामनाथ और जानकी की है। दोनों ने अपने जीवन का अधिकांश समय एक छोटे से खेत में करते हुए बिताया था। रामनाथ और जानकी के तीन बच्चे थे - दो बेटे, सुरेश और विनोद, और एक बेटी, सुमन। वर्षों की मेहनत के बाद, उन्होंने अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दी, जिससे वे शहर में अच्छी नौकरियों में लग गए।

बुढ़ापे में रामनाथ और जानकी के जीवन में बच्चों से मिलने की उम्मीद ही उनकी सबसे बड़ी खुशी थी। लेकिन जब बच्चे शहर गए, तो वे धीरे-धीरे अपने मां-बाप से दूर होते चले गए। सुरेश और विनोद ने शादी कर ली और अपने परिवारों के साथ शहर में बस गए। सुमन की भी शादी हो गई, और वह अपने ससुराल चली गई।

समय बीतता गया, और रामनाथ और जानकी धीरे-धीरे अपने गांव में अकेले रह गए। शुरु-शुरु में बच्चें कभी-कभार फोन कर लिया करते थे, लेकिन धीरे-धीरे यह सिलसिला भी कम होता गया। रामनाथ का शरीर अब पहले जैसा नहीं रहा था, खेत में काम करना भी मुश्किल हो गया था। जानकी को आंखों की रोशनी कमजोर पड़ चुकी थी, और वह घर के छोटे-छोटे काम भी ठीक से नहीं कर पाती थी।

एक दिन यगांव में एक बुजुर्ग सभा का आयोजन हुआ। वहां कई बुजुर्ग इकट्ठा हुए थे, और सबने अपनी समस्याएं साजा कीं। किसी के बच्चे उन्हें छोड़ गए थे, तो किसी को बूढ़े होने के कारण घर में बोझ समझा जाता था। रामनाथ और जानकी ने भी अपनी आपबीती सुनाई। लेकिन वहां एक बुजुर्ग, महादेव, ने एक बात कही जो रामनाथ के दिल में गहरे उतर गई। महादेव ने कहा, 'बुढ़ापा उस पेड़ की तरह होता है, जो खुद अने पैरों पर खड़ा रहकर अपने साए में दूसरों को पनाह देता है। पर अगर पेड़ दूसरों की उम्मीद में ज़िंदा रहे, तो वह सूख जाता है।' इस बात में रामनाथ और जानकी को सोचने पर मजबूर कर दिया। उन्होंने अब तय किया कि वे अपने बच्चों की उम्मीद छोड़कर अपनी ज़िंदगी को अपने तरीके से जिएंगे।

एक दिन रामनाथ ने गांव के मुखिया से बात की और अपने खेत के एक हिस्से को गांव के छोटे किसानों के बीच बांटने का निर्णय लिया, ताकि जो लोग बिना जमीन के थे, वे उस पर खेती कर सकें। इसके बदले में उन्होंने यह शर्त रखी कि जो भी इस जमीन पर खेती करेगा, वह अपनी फसल का थोड़ा हिस्सा उन्हें देगा। यह सौदा गांव के लोगों के लिह भी फायदेमंद था, और इस तरह रामनाथ और जानकी के घर में फिर से अनाज और सब्जियां आने लगीं।

वहीं जानकी ने भी घर के, पुराने कपड़ों से कबल और चादरें बनाने का काम शुरू कर दिया। वह गांव की औरतों को सिखाने लगी कि कैसे पुराने कपड़ों से कुछ नया बनाया जा सकता है। धीरे-धीरे जानकी का यह काम गांव में मशहूर हो गया, और लोग उनके पास पुराने कपड़े लाने लगे ताकि वह उनसे नए कंबल बना सकें। इस काम से जानकी का मन भी लगा रहता और कुछ पैसे भी मिलने लगे।

अब रामनाथ और जानकी अपने बुढ़ापे में आत्मनिर्भर हो गए थे। वे खुश थे, क्योंकि उन्होंने अपने जीवन का उद्देश्य फिर से खोज लिया था। गांव में उनकी इज्जत और बढ़ गई थी। बच्चे जब भी कभी फोन करते, तो वे सिर्फ उनका हालचाल पूछते और किसी शिकायत के बिना अपनी ज़िंदगी के बारे में बताते। एक बार सुरेश और विनोद ने सोचा कि वे अब मां-बाप को अपने पास शहर बुला लेंगे, लेकिन रामनाथ और जानकी ने साफ मना कर दिया। उन्होंने कहा, 'हम यहीं ठीक हैं, तुम्हें चिंता करने की जरूरत नहीं। हमें हमारे गांव और हमारी ज़िंदगी से प्यार है।'

समय के साथ, रामनाथ और जानकी का स्वास्थ्य और कमजोर होता गया, लेकिन उनका आत्मविश्वास और दृढ़ता कभी नहीं डगमगाई। एक दिन अब रामनाथ की तबीयत बहुत खराब हो गई, तो गांव के लोग इकट्ठा हो गए। डॉक्टर ने बताया कि रामनाथ के बचने की संभावना कम है। जानकी यह सुनकर चुप हो गई, लेकिन उसने अपने आंसू नहीं बहाए। उसने रामनाथ का हाथ पकड़ा और कहा, 'हमने अपनी ज़िंदगी जी ली है, अब समय आ गया है कि हम इस यात्रा को खत्म करें। लेकिन मैं जानती हूं तुम जहां भी रहोगे, हमेशा मेरे साथ रहोगे।'

रामनाथ कुछ दिनों बाद इस दुनिया को छोड़ गए। जानकी अकेली रह गई, लेकिन गांव के लोग उसका सहारा बने रहे। रामनाथ की मौत के बाद जानकी ने भी अपनी बाकी ज़िंदगी गांव की औरतों को सिखाने और दूसरों की मदद करने में बिता खी। उसकी आंखों में अब भी वही चमक थी, जो रामनाथ के साथ बिताए पलों की यादों से आई थी।

जानकी को हमेशा गर्व था कि उसने और रामनाथ ने अपने जीवन के अंतिम दिनों में किसी पर निर्भर न रहकर आत्मसम्मान के साथ जीने का रास्ता चुना। यह कहानी सिर्फ बुजुर्गों की नहीं, बल्कि उन सभी की है, जो अपनी उम्मीदों को छोड़कर अपनी ज़िंदगी के नए मायने खोजते हैं। जीवन में सबसे बड़ा सुख वही है, जब इंसान अपने आप को पहचान ले और दूसरों की मदद करते हुए अपनी खुशियों को तलाश करें।

इस तरह, रामनाथ और जानकी की कहानी एक उदाहरण बन गई कि उम्र चाहे जो भी हो, आत्मनिर्भरता और आत्मसम्मान से बड़ा कोई सुख नहीं।



श्री के. नेताजी
खलासी (दिहाड़ी कर्मचारी)
सामान्य प्रशासन विभाग

पेबलिंग

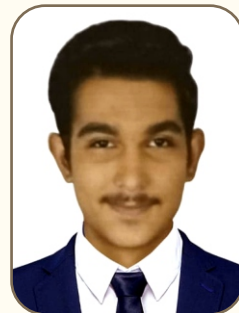
एक बूढ़ी औरत रोज़ बाजार में फल बेचा करती थी। उसके पास से एक युवक प्रतिदिन फल खरीदा करता था और फल खरीदने के बाद रोज कहता था - 'मासी तुम्हारे ये संतरे बहुत-ही खट्टे होते हैं।' ऐसा कहकर एक संतरा उन्हें चखने के लिए रोज दे जाता। एक दिन उसकी पत्नी उससे पूछती है कि संतरे जो रोज मीठे ही होते हैं तो तुम रोज मासी को ऐसा क्यों कहते हो? तब वह युवक मुस्कुराते हुए कहता है कि वह मासी बहुत गरीब है वो ऐसे तो संतरे खाती नहीं होंगी इसी चखने के बहाने वह फल तो खाएंगी।

वहीं दूसरी तरफ युवक के इस भाव को वह बूढ़ी मासी भी अच्छे से समझती थी इसलिए वह थोड़े ज्यादा ही फल तराजू में तौल कर उस युवक को दिया करती थी। इस प्रकार से आज के व्यस्त जीवन में एक-दूसरे के प्रति प्रेम एवं परवाह व्यक्त करने के तरीके के रूप में इस प्रकार के व्यवहार को आज के आधुनिक दौर में 'पेबलिंग' कहा जाता है।

'पेबलिंग' शब्द की उत्पत्ति एडेली और जेंटू पेंगुइन के व्यवहार से हुई है, जो अपने प्रेम को बताने के लिए अपने साथियों को चिकने कंकड़ भेंट करते हैं। आज के इस व्यस्त समय में एक-दूसरे के प्रति अपने स्नेह एवं फिक्र को बताने के लिए लोगों ने इस 'पेबलिंग' व्यवहार को अपनाया है। डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग करके भी छोटी-छोटी विचारशील संदेश और परिस्थिति अनुसार इमोजी को साझा कर अन्य लोगों के प्रति अपने स्नेह को बताया जाता है।



खेल का महत्व



श्री भावेश बचवानी
सुपुत्र श्री हरीश बचवानी
वित्त विभाग

शारीरिक गतिविधियों में शामिल होने के लिए खेल सबसे अच्छा तरीका है, जो बहुत लाभदायक है। बहुत से देशों में खेलों को बहुत अधिक महत्व दिया जाता है, क्योंकि वे एक व्यक्ति के जीवन में खेल के वास्तविक लाभ और व्यक्तिगत व पेशेवर जीवन में इसकी आवश्यकता को जानते हैं। किसी धावक (एथलीट) या पेशेवर खिलाड़ी के लिए शारीरिक गतिविधियाँ बहुत महत्वपूर्ण होती हैं। यह उनके और उनके जीवन के लिए बहुत मायने रखती है। खेल खिलाड़ियों के लिए राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बहुत अच्छा अवसर रखता है। कुछ देशों में, कुछ अवसरों कार्यक्रमों और त्योहारों के आयोजन पर स्पोर्ट्स और खेल गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं, उदाहरण के लिए, प्राचीन यूनान के ओलम्पियाड को सम्मान प्रदर्शित करने के लिए ओलम्पिक खेलों का आयोजन किया जाता है।

खेल सभी के व्यस्त जीवन में विशेष रूप से विद्यार्थियों के जीवन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यहाँ तक कि, पूरे दिन में से, कम से कम थोड़े से समय के लिए सभी को खेलों में सक्रिय रूप से भाग लेना चाहिए। खेल बहुत ही आवश्यक है क्योंकि, खेलों में नियमित रूप से शामिल होने वाले व्यक्ति में यह शारीरिक और मानसिक तंदुरस्ती लाता है। जिन व्यक्तियों की व्यस्त दिनचर्या होती है, वे बहुत ही आसानी व शीघ्रता से थक जाते हैं। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि, एक सूकून और आराम का जीवन जीने के लिए हम सभी को स्वस्थ मस्तिष्क और स्वस्थ शरीर की आवश्यकता होती है।





श्रीमती पुष्पा ईसरानी
प्रधान लिपिक
सा.प्र.विभाग

ब्रह्मकुमारी का संदेश

ब्रह्मकुमारी संस्थान से पधारे प्रतिनिधियों ने DPA में आध्यात्मिक संदेश प्रदान किया। राखी के पावन पर्व के अवसर पर भाईचारे, शांति और सांस्कृतिक मूल्यों को जीवित रखने का संदेश दिया गया। किए गए विचार अत्यंत सारगर्भित, भावनात्मक और आध्यात्मिक रूप से समृद्ध हैं।

सुंदर प्रवाहपूर्ण संदेश

रक्षाबंधन: रक्षा का संकल्प कंवल कलाई का नहीं, मन का भी हो

श्रावण मास अपने आप में पवित्रता, शुद्धता और आत्म-चिंतन का प्रतीक है। इसी माह में आने वाला रक्षाबंधन मात्र एक परंपरा या फैशन नहीं, बल्कि भाई-बहन के विशुद्ध प्रेम, बलिदान और आत्मिक संबंध का प्रतीक है। यह त्योहार हमें याद दिलाता है कि रक्षा केवल बाहरी नहीं, आंतरिक भी होनी चाहिए विचारों की, मूल्यों की और आत्मा की।

आज समाज में असुरक्षा की भावना गहराई से बैठ गई है। न केवल बहनें, बल्कि भाई भी इस भय से अजूते नहीं। सच्ची रक्षा वही है जो मन को, विचारों को और जीवन को शुद्ध बनाए। राखी बांधते समय यदि हम केवल कलाई को नहीं, बल्कि अपने मन को भी बुराई से बांध लें तो नफरत, क्रोध, लोभ, मोह और द्वेष हमारे जीवन को छू नहीं पाएंगे।

हमारे बच्चे आज भी श्रद्धा से सुबह हमारे लिए भोजन की थाली सजाते हैं, अगरबत्ती लगाते हैं, और प्रेम से हमें परोसते हैं। फिर भी हम उन्हें सुधारने के लिए सुझाव देते रहते हैं। ठीक उसी तरह, परमपिता परमात्मा भी हमें सदैव संकेत देते हैं कि : ऐसा करो, वैसा मत करो। लेकिन हम मनुष्य काम, क्रोध, लोभ और मोह में उलझे रहते हैं। ऐसे में ईश्वर हमारे जल अर्पण से नहीं, हमारे निर्मल मन से प्रसन्न होते हैं।

जल से निर्मल बनें, फूल से खुशबूदार बनें। तिलक केवल शोभा नहीं, आत्म-जागृति का प्रतीक हो। राखी के दिन जो तिलक हम लगाते हैं, वह गुर्णा की पहचान और आत्मचिंतन का अवसर हो। केवल मीठा बोलने से जीवन मधुर नहीं होता – मन की मिठास, आचरण की मधुरता ही सच्चा मधुर जीवन बनाती है।

आज आवश्यकता है कि हम मन को दर्पण बनाएं जिसमें जीवन की सुंदरता और सच्चाई प्रतिबिंबित हो। यह त्योहार हमें सिखाता है कि परिश्रम, प्रेम और संबंधों की कद्र करें। जो मेहनत और भाव हमारे निकटजन करते हैं, उसकी अनदेखी न करें।

राखी केवल बहन की रक्षा का संकल्प नहीं, बल्कि यह प्रतिज्ञा है कि मैं स्वयं को भी इतना शुद्ध, शक्तिशाली और गुणवान बनाऊँ कि किसी को मेरे कारण पीड़ा न हो।

कुरीतियों से बचें, बुराइयों से दूर रहें और सच्चे मन से आत्मरक्षा का संकल्प लें। रक्षाबंधन का धागा हमें सिर्फ बंधन नहीं देता यह हमें आत्म-ज्ञान, आत्म-बल और परमात्मा से जुड़ाव का उपहार देता है।

ॐ शांति





श्रीमती दीक्षा राजपुरोहित
सहायक प्रबंधक,
यातायात विभाग

तुलना के सुर

लड़की : आज हम नाराज़ हैं,
और हमें कोई नहीं मना सकता।

लड़का : तुम वो त्योहार हो, जिसे हर दिन मैं मना सकता हूँ।
तेरी सुबह की मुस्कान के सहारे पूरी जिंदगी बिता सकता हूँ।

लड़की : बस, बस... फेंको मत ! जानती हूँ सब तुम्हारी करामातें।
पहले खूब तारीफ करते हो, फिर मनवा लेते हो अपनी सारी बातें।

लड़का: नहीं, नहीं... आज जो भी कहूँगा, सच कहूँगा।
और फिर कभी शिकायत का मौका नहीं दूँगा।
आज बताता हूँ, मेरे लिए आखिर क्यों इतना खास है तू।

अंधेरी रात में पूर्णमासी के चाँद सी तू।
भोर में सूरज की पहली किरण सी तू।
बंजर जमीन पे रिमझिम बरसती बरसात सी तू।
धूप से छाँव का एहसास सी तू।
इस भागती हुई जिंदगी में एक ठहराव है तू।
मेरी वर्णमाला का 'अ' भी और 'ज्ञ' भी तू।
मेरी भूगोल में पृथ्वी भी तू और ब्रह्मांड भी तू।
मेरी गणित का शून्य भी तू और अनंत भी तू।
मेरा सफर भी तू, मंज़िल भी तू।
मेरा भूत भी तू, भविष्य भी तू।

मेरे लिए नूर भी तू, कोहिनूर भी तू।
मेरी कमजोरी भी तू और ताकत भी तू।
मेरी जिंदगी की कविता का प्रसंग भी तू, सार भी तू।

मेरे ख्वाब जो मुकम्मल हो गए, वो हकीकत है तू।
मेरे ईश्वर की झलक दिखलाए, वो शख्सियत है तू।
इस झूठी दुनिया में सच का एहसास है तू।

बस, इसी लिए मेरे दिल के इतना पास है तू।
इतना खास है तू। इतना खास है तू।





श्री शिवचरण मीना
सहायक
अपतट तेल टर्मिनल
वाडीनार

जल ही जीवन है



जल ही जीवन है, यह सत्य अपरंपार, इसके बिना सूना यह संसार।
नदी की कल-कल, झरनों की धारा, जीवन को देती नया सहारा।।

सागर की लहरें, झील का किनारा, हर जीव का इसमें बसता निवाला।
वर्षा की बूंदें, सावन की फुहार, धरती पर लाती हरियाली की बहार।।

पेड़ों की जड़ें, पत्तों की हरीतिमा, सब में बसता जल का ही प्रतिमा।
पशु-पक्षी, मानव हो या वनस्पति, सभी को जल की है आवश्यकता अपरिमित।।

धरती के गर्भ में जल का भंडार, संरक्षित करना हमारा कर्तव्य, निस्संदेह पार।
नदियों का संरक्षण, जलाशयों की सफाई, हमारी प्राथमिकता हो, यह सच्चाई।।

बढ़ते प्रदूषण से जल हो रहा खराब, इस दिशा में कदम उठाना हमारा है जवाब।
वृक्षारोपण से जल संरक्षण संभव, इससे ही होगा भविष्य सुंदर और संवेदनशील।।

बूंद-बूंद से सागर भरता, यह न भूलें, जल की हर बूंद कीमती है, इसे सहेजें, इसे झूलें।
बचपन में सुनी थी यह कहानी, जल की महत्ता है अमूल्य, इसे जानों ज्ञानी।।

जल की कमी से त्रस्त यह धरा, संरक्षण में ही इसका समाधान भरा।
आओ मिलकर यह संकल्प लें, हर बूंद को सहेजें, जल की कीमत समझें।।

जल ही जीवन है, यह मंत्र दोहराएं, हम सब मिलकर जल को बचाएँ।





श्रीमती हनीफा शमीम
वरिष्ठ लिपिक
लेखा अनुभाग, वित्त विभाग

अक्स

दिलों में चाह ले के निकलें है,
लबों पे आह ले के निकलें है।
जो चल सको तो चलो साथ मेरे,
हथेल पे जान ले के निकले हैं।
कभी तो अपनी बात कर लेना,
खुली किताब ले के निकले हैं।
तुम कोई रास्ता सुझा देना,
के तुम पे आस ले के निकले हैं।
कोई तो होगा सफर में साथ तेरे,
दोस्त दो चार ले के निकले हैं।
चलो अब साथ मेरे हो लो तुम,
तुम्हारी चाह ले के निकले हैं।
कभी तो कर लो यकीन मुझ पे,
दिल सर-ए-राह ले के निकले हैं।
न पाओगे साथी कोई मेरे जैसा,
रिश्ता हम खास ले के निकले हैं।
जिंदगी मुश्किलों का दरिया है,
वक्त आसान ले के निकले है।
ये डर है तुम को कही खो ना दें।
मंजिल-ए-यार ले के निकले है।
सभी ने पा ली अपनी मंजिले,
हम तेरा साथ ले के निकले हैं।
'हनुशमी' बेशक अक्स ही हैं,
हम कद्रदान ले के निकलें है,
लबों पे आ ले के निकलें है।
जो चल सको तो चलो साथ मेरे,
हथेली पे जान ले के निकले हैं।

हिन्दी परववाड़ा पर विशेष



श्रीमती तन्वी कैलाश उचवानी
वरिष्ठ लिपिक
सामान्य प्रशासन विभाग

36 व्यंजनो का भोग लगे,
और 12 स्वर ताल में गायें,
तब जाकर भारत माता के,
एक सुर में हम नग्मे गायें।

हिंदुस्तान में रहते हम सब
'हिन्दी हैं हम' कहते जायें,
लेकिन शब्दों के सही सब,
उच्चारण भी बोल न पायें।

एक दिवस और एक परववाड़ा
हिन्दी के बस नाम कर जायें,
बाकी के बरस में, हाय हैल्लो
कह कर झूठी शान बढ़ाएं।

नहीं लालसा बने सब पंडित,
या अलंकार-छंदों के विद्वान,
सूर, कालिदास ना हो कबीर,
कम से कम भाषा बोल जाएं।

है मिश्री सी मीठी भाषा में शान,
है भारतीय होने की पहचान,
हैं सभी बोलियों की सरताज,
हिन्दी भाषा को न ओछा जान।
हिन्दी भाषा को न ओछा आंक।

कवयित्री हर्षा मूलचंदानी जी की
कृति से संकलित





श्री कमल आसनानी
उपाध्यक्ष के निजी सचिव

माँ सा कोई खूबसूरत नहीं

दौड़ती रहती है दिन-भर, सबकी सहूलियत का रहता है खयाल उसे,
खुद के लिए मगर पल-भर की भी उसे फुरसत नहीं,
हाड़-मांस का पुतला है, अजंता की कोई मूर्त नहीं,
होंगे हसीन चेहरे बहुत इस जहां में मगर,
मेरी माँ सा कोई खूबसूरत नहीं

पापा का टिफिन, दादी की दवाई, घर के काम सारे और बच्चों की पढ़ाई,
सबकी जरूरतों की फिक्र करती, मानो उसकी खुद की कोई जरूरत ही नहीं,
होंगे हसीन चेहरे बहुत इस जहां में मगर,
मेरी माँ सा कोई खूबसूरत नहीं

बना कर उसको जगत का पालनहार भी निश्चिन्त होकर बैठ गया,
जानता था की फरिश्ता गया है धरती पर अब उसकी वहां जरूरत नहीं,
होंगे हसीन चेहरे बहुत इस जहां में मगर,
मेरी माँ सा कोई खूबसूरत नहीं

समझ नहीं आता कर्ज उसका कैसे हम उतार पाएंगे,
उसके लिए ये जन्म तो क्या १०० जन्म भी कम पड़ जायेंगे,
कर्ज ये उतार पाऊं कभी, नजर आती मुझे ऐसी कोई सूरत नहीं,
होंगे हसीन चेहरे बहुत इस जहां में मगर,
मेरी माँ सा कोई खूबसूरत नहीं



सुश्री दर्शना धोरिया
डेटा एंट्री ऑपरेटर
सामान्य प्रशासन विभाग

ऑपरेशन सिंदूर : 'वीरों की गाथा'

सिंदूर की लाली, माँग में सजी,
नारी की शक्ति, अब रण में बजी।
पहलगाम की चीखें, दिल को चीर गई,
आतंक की साजिश, मासूमों को पीर दी।

ऑपरेशन सिंदूर, भारत का प्रहार,
आतंक के ठिकानों पर, बजा विजय का तार।
राफेल की गर्जना, ड्रोन की उड़ान,
निशाने पर दुश्मन, बिखरा उनका मान।

भारत की सेना, वीरों का जोश,
सिंदूर बन गया, प्रतिशोध का तोष।

नारी का अपमान, मिटेगा अब यहीं,
सिंदूर की रेखा, बनेगी सीमा नई।
जय हिंद की सेना, जय भारत का स्वर।





सुश्री सुहाशी सिन्हा
डाटा एंट्री ऑपरेटर
सामान्य प्रशासन विभाग

पत्थरों का बोझ

एक छोटे से गाँव में वीर नाम का लड़का रहता था। वह हमेशा शिकायत करता रहता “मेरी जिंदगी मुश्किलों से भरी है... मुझसे कुछ नहीं होगा।”

एक दिन गाँव के बुद्धिमान शिक्षक दयानंद जी ने उसे बुलाया और कहा : ‘अगर तुम्हें अपनी समस्या का जवाब चाहिए, तो मेरे साथ पहाड़ पर चलो।’ वीर मान गया। रास्ते में दयानंद जी ने उसे बड़ा सा झोला दिया, जिसमें कुछ पत्थर थे।

उन्होंने कहा, ‘जब भी तुम्हें लगे कि जिंदगी बहुत भारी लग रही है, इस झोले में एक पत्थर डाल देना।’

वीर चलता गया, और हर मुश्किल सोचना पर वह धीरे-धीरे पत्थर डालता रहा - गर्मी अधिक है, एक पत्थर, रास्ता लंबा है, एक पत्थर, थकान हो रही है, एक पत्थर।

कुछ ही देर में झोला बहुत भारी हो गया। वीर रुक गया और बोला - ‘गुरुजी ! ये झोला इतना भारी हो गया है कि मैं चल ही नहीं पा रहा !’

दयानंद जी मुस्कराए और बोले : ‘बेटा, इसे ही तो मैं तुम्हें समझाना चाहता था। हम भी जिंदगी में अपनी परेशानियाँ, डर और शिकायतें ऐसे ही जमा कर लेते हैं ... और फिर खुद ही अपनी यात्रा मुश्किल बना लेते हैं।’

उन्होंने झोला खोलकर सारे पत्थर फेंक दिए और बोले - ‘अब बताओ, हल्का लग रहा है?’

वीर ने राहत की सांस ली। ‘हाँ गुरुजी, अब मैं आसानी से चल सकता हूँ।’

तब गुरुजी बोले : “याद रखना - जिस दिन तुम शिकायतें, डर और बेकार के विचार फेंक दोगे, जिंदगी भी उतनी ही हल्की हो जाएगी। तुम्हें बोझ नहीं, हिम्मत लेकर चलना है।”

वीर ने उस दिन से अपनी सोच बदल दी।

थोड़ा थोड़ा करके उसने अपने डर हटाए, शिकायतें छोड़ीं...

और वही लड़का आगे चलकर अपने गाँव का सबसे सफल इंसान बना।



श्री सोनू शाह
स्नातक प्रशिक्षु
यांत्रिक विभाग

ऑपरेशन सिंदूर

रक्त नहीं, सिंदूर है माँ,
जो माथे पर गर्व सजाता है।
देश की माटी के नाम पे,
हर बेटा शीश झुकाता है।

सीमा की रेखा जब टूटी थी,
आँखों में अगार जला था।
‘ऑपरेशन सिंदूर’ कह उठा दिल,
हर वीर रण में चला था।

पत्नी ने थामा राखी सा संकल्प,
‘जीत के आना’ कहकर विदा किया।
बेटी ने पूछा, ‘पापा कब आओगे?’
उसने बस मुस्कुरा दिया।

गोली नहीं डराती हमको,
हम तो इश्क वतन से करते हैं।
मौत भी सलाम ठोके वहाँ,
जहाँ सपूत जन्मा करते हैं।

लौटे कई तिरंगे में लिपटकर,
पर सिर ऊँचा करके गए।
ऑपरेशन सिंदूर की हर गाथा,
भारत माँ के आँचल में सहे।

सलाम है उन वीरों को,
जो हँसते-हँसते प्राण लुटा आए।
ऑपरेशन सिंदूर की हर कहानी,
भारत माँ की गोद में गूँज जाए।



सुश्री जिनल सोलंकी
प्रशिक्षु
यांत्रिकी विभाग

‘हिन्दी है हम’

असमंजस में हूँ थोड़ी, हूँ थोड़ी confused..

हिन्दी में दिल की बात करू, या English का करू use..

एक तरफ राजभाषा है, दूसरी और भाषा का राज है..

English नहीं आने पर शर्म है आती, पर my Hindi is bad कहने का नाज़ है।

अगर किया शुद्ध हिन्दी का प्रयोग, तो पड़ जाती है लोगों ने खराश...

But complicated English बोलना is such a panache..

हम तो जानते थे की, चाचा, मामा, बुआ, मौसी क्या रिश्ते नाते है..

But new generation के लिए तो हर कोई uncle, aunty हो जाते है..

मानती हूँ.... मानती हूँ English आना जरूरी है

पर हिन्दी ऐसे तो न बोलो जैसे कोई मजबूरी है।

कोई गलती करे English में, तो मदद करो बोलकर सच...

मत उड़ाओ मज़ाक उसका, मत करो उसे जज...

देश पहले से ही बँटा है..

भाषा के आधार पर उसे और मत बाँटो..

एक भाषा देश को जोड़ सकती है...

बस अपनी कट्टरवादिता को छाँटो..

डॉ. कपिल व्यास की कृति से संकलित



चींटी

हमेशा क्रियात्मक रहती चींटी,

परिश्रम का गान सुनाती रहती चींटी ।

गर्मी के मौसम में ही भोजन बटोरकर लाती चींटी,

दूरदर्शिता से सर्दियों के लिए भोजन बटोरती चींटी।

बिना तेना के काम करती चींटी,

हमें अपनी जिम्मेदारी समझाती चींटी।

नन्हें कदमों से पहाड़ पर चढ़ती, गिरती और फिसलती चींटी,

हमें दृढ़ संकल्प, प्रयास और न हारने का पाठ पढ़ाती चींटी।

समूह में काम करके सफलता प्राप्त करती चींटी,

मानव जाति को एकता की भावना सीखाती चींटी।



श्रीमती मैरी विजयकुमार
वरिष्ठ लिपिक
वित्त विभाग



राजभाषा नीति का कार्यान्वयन अनुपालनार्थ विशेष ध्यान देने योग्य बिंदु

1. राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3): इन दस्तावेजों में सामान्य आदेश, संकल्प, परिपत्र, नियम, अधिसूचनाएं, प्रशासनिक और अन्य रिपोर्टें, प्रेस विज्ञापितियां, संविदाएं, करार, अनुज्ञापितियां, अनुज्ञापत्र, सूचनाएं और निविदा-प्रारूप शामिल हैं।
2. राजभाषा नियम 1976 के नियम 5 के अनुसार हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाए।
3. हिंदी में मूल पत्राचार: मूल पत्र का निर्माण राजभाषा नीति के अनुसार निर्धारित क्षेत्रों में अलग-अलग प्रतिशत में हिंदी में किया जाना आवश्यक है। 'क' क्षेत्र में कम से कम 90% मूल पत्र अनिवार्य रूप से हिंदी में तैयार किए जाएँ। 'ख' क्षेत्र में भी 90% पत्र हिंदी या हिंदी-से-संबंधित निकट भाषाओं में तैयार किए जाने चाहिए। वहीं 'ग' क्षेत्र के लिए यह न्यूनतम लक्ष्य 55% पत्र हिंदी में तैयार करने का है।
4. टिप्पणियाँ राजभाषा कार्यान्वयन के अंतर्गत कार्यालयों में तैयार की जाने वाली टिप्पणियाँ निर्धारित वार्षिक लक्ष्य के अनुसार कम से कम 50% हिंदी में लिखी जानी चाहिए।
5. रजिस्टर, फाइलें और फॉर्म: राजभाषा प्रावधानों के अनुसार कार्यालय में रखे जाने वाले सभी रजिस्ट्रों का स्वरूप द्विभाषी (हिंदी-अंग्रेजी) होना चाहिए, ताकि अभिलेख दोनों भाषाओं में समान रूप से उपलब्ध रहें। इसी प्रकार, फाइलों के कवर या ऊपरी भाग पर दर्ज किए जाने वाले सभी विवरण भी अनिवार्यतः द्विभाषी रूप में लिखे जाएँ।
6. लिफाफों पर पता हिंदी में: राजभाषा नीति के अनुरूप 'क' और 'ख' क्षेत्रों में प्रेषित किए जाने वाले सभी पत्रों के लिफाफों पर पता अनिवार्य रूप से देवनागरी लिपि में लिखा जाना चाहिए।
7. कोड, मैनुअल और नियम पुस्तिकाएँ: कार्यालय से संबंधित सभी मैनुअल, कोड तथा प्रक्रियागत नियम-पुस्तिकाएँ हिंदी और अंग्रेजी, दोनों भाषाओं में उपलब्ध कराई जानी चाहिए, ताकि प्रशासनिक कार्य सरल और सभी के लिए सुलभ हो सके। इसी क्रम में, देश में प्रकाशित होने वाले सभी अधिनियम, नियम, संहिताएँ और संबद्ध विधिक दस्तावेज भी द्विभाषी रूप में उपलब्ध होना अनिवार्य है, जिससे किसी भी भाषा-आधारित बाधा के बिना उनका व्यापक उपयोग हो सके।
8. सेवा-पुस्तिका: कर्मचारियों की सेवा से संबंधित सभी प्रविष्टियाँ तथा अभिलेख हिंदी में दर्ज किए जाएँ, ताकि आधिकारिक अभिलेखन में हिंदी का नियमित प्रयोग सुदृढ़ रूप से सुनिश्चित हो।
9. कंप्यूटर सुविधा: कार्यालय के सभी कंप्यूटरों में हिंदी टंकण (Unicode) की सुविधा उपलब्ध कराना आवश्यक है, ताकि डिजिटल कार्यों में भी हिंदी का सुचारु और निर्बाध उपयोग हो सके।
10. पट्टिकाएँ, नाम-पट्ट और स्टेशनरी का द्विभाषी उपयोग: कार्यालय परिसर में प्रयुक्त सभी पट्टिकाएँ, नाम-पट्ट, सूचना-पट्ट, लेटरहेड, लिफाफे की लिखावट, रबर-स्टैप, विजिटिंग कार्ड, वाहनों के विवरण, लोगो, मोनोग्राम, चार्ट, नक्शे, बैनर, पोस्टर, साइन्स, बैज और फाइल कवर, सभी का प्रयोग हिंदी और अंग्रेजी दोनों में किया जाना चाहिए। साथ ही, हिंदी टंकण एवं कार्यान्वयन को सुचारु रखने हेतु विभागों को आवश्यक सहायता एवं प्रशिक्षण भी उपलब्ध कराया जाना चाहिए।
11. हिंदी निरीक्षण: राजभाषा प्रावधानों के प्रभावी पालन हेतु अधिकारियों व कर्मचारियों द्वारा किए जा रहे हिंदी प्रयोग की नियमित समीक्षा और मॉनिटरिंग सुनिश्चित की जानी चाहिए।
12. हिंदी में कार्य बढ़ाने हेतु प्रोत्साहन: जिन कर्मचारियों या इकाइयों द्वारा उत्कृष्ट रूप से हिंदी में कार्य किया जाता है, उन्हें पुरस्कार, मान्यता और प्रोत्साहन योजनाओं के माध्यम से प्रेरित किया जाए, ताकि हिंदी के प्रयोग की निरंतरता और गुणवत्ता दोनों में वृद्धि हो सके।



28वाँ अंक
जुलाई-दिसम्बर 2025

लहरों का शाजहंश

अपनी भाषा में शपथ लेता हूँ
कि मैं किसी भी भाषा का
अपमान नहीं करूँगा
और मेरी मातृ भाषा
हर जन्म में बदलती रहे
इसके लिए मैं बार-बार
जन्म लेता रहूँ
यह मैं जीव-जगत से कहता हूँ
चिड़ियों, पशुओं, कीट-पतंगों से भी।

— विनोद कुमार शुक्ल
ज्ञानपीठ पुरस्कार 2025 से सम्मानित



दीनदयाल पत्तन प्राधिकरण

(भारत का नं. 1 महापत्तन)